

ओमशान्ति मीडिया



मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -14 अंक - 4 मई -II, 2013



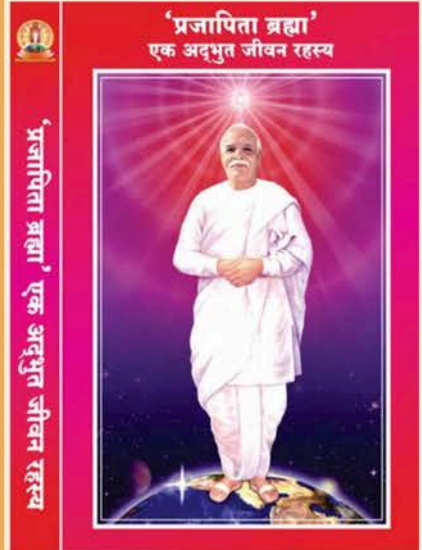
(मासिक)

माउण्ट आबू

मूल्य 7.50 रु.

विश्व की सबसे बड़ी पुस्तक का भव्य विमोचन

मुम्बई (मुलुंद)। ब्रह्माकुमारी संस्था के तत्वाधान में विश्व की सबसे बड़े आकार 28 X 18 फीट वाली पुस्तक का विमोचन भव्य समारोह में सम्पन्न हुआ। इसे 'एशिया बुक ऑफ रिकार्ड्स' में शामिल किया जा चुका है। इस किताब में ब्रह्माकुमारी संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा के 75 वर्ष के मिशन की अनूठी गाथा लिखी गई है।



एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स (इंग्लैंड) के प्रतिनिधि थामस बेन ने पुस्तक "प्रजापिता ब्रह्मा - एक अदभुत जीवन रहस्य" को विश्व की सबसे बड़े आकार वाली पुस्तक के रूप में मान्यता देते हुए कहा कि आध्यात्मिकता एवं धार्मिक आधाराओं को प्रतिपादित करने वाली यह पुस्तक निश्चित रूप से युवाओं में प्रेरणा एवं जागृति लायेगी।

विचार, वाणी और व्यवहार का केन्द्र - संगमतीर्थ धाम : मोदी

अहमदाबाद (महादेवनगर)। संस्कार सरिता का तीर्थ धाम है यह संगमतीर्थ धाम। श्रेष्ठ मानव निर्मित करने के लिए विशेष प्रशिक्षण प्रदान करने का केन्द्र बनेगा संगमतीर्थ धाम। यह धाम विचार और आचार का संगम है, वाणी और व्यवहार का संगम है, अभय और निर्भय का संगम है। भारत की मूलभूत सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक भारत के सपनों का साकार रूप है संगम तीर्थ धाम। संस्कार स्थापन की प्रक्रिया को जितना बल मिलेगा उतना ही समाज स्वस्थ बनेगा।

उक्त विचार गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा नवनिर्मित संगम तीर्थ धाम के उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्थित लगभग तीन हजार गणमान्यजन तथा ब्रह्माकुमारी भाई-बहनों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि लाखों नौजवानों को प्रशिक्षित करने की यह योजना इस बात का परिचायक है कि हम अपनी वर्तमान स्थिति से और अधिक उच्चता को प्राप्त करना चाहते हैं और समाज को श्रेष्ठ योगदान देना चाहते हैं। अगर संस्कृति विस्तृत, सक्षम व प्राणवान रहती है तो उसका फैलाव तेज होता है। संस्कृति मन-मंदिर में विराजित है तो विकृति की कोई संभावना नहीं होती है। जैसे-जैसे संस्कार व संस्कृति का प्रभाव कम होता जाता है वैसे-वैसे विकृति का दुष्प्रभाव बढ़ने लगता है। अगर विकृति से बचना है तो संस्कार और संस्कृति को बढ़ावा देना आवश्यक है। इस संगम तीर्थ धाम में ऐसी व्यवस्था विकसित की जा रही है जिसमें युवाओं को उन प्राचीन मूल्यों का अनुभव कराया जाए।



गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ब्रह्माकुमारी द्वारा नवनिर्मित संगमतीर्थ धाम के उद्घाटन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए। मंचासीन हैं ब्र.कु.निर्वैर, पूर्व मुख्यमंत्री नरहरि अमीन, ब्र.कु.चन्द्रिका तथा मुकेश पटेल।

मुख्यमंत्री ने युनिवर्सिटी कन्वेन्सन सेन्टर के विशाल आडिटोरियम में ब्रह्माकुमारी संस्था में पिछले पच्चीस वर्षों से ज्ञान-योग की साधना करने वाले साधकों को सम्मानित करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था जैसे अनेक आंदोलन भारत की महान परम्परा व विरासत को बचाये रखने के लिये अपना जीवन समर्पित कर रहे हैं। यहाँ मैं मुगुटधारी वयोवृद्ध, तपोवृद्ध साधकों को देख रहा हूँ जिन्होंने एक ही विचार के लिये, एक ही कार्य के लिये अपने जीवन के महत्वपूर्ण पच्चीस साल लगा दिये, ये छोटी घटना नहीं है, मैं आप सबका वंदन करता हूँ। लाखों नौजवान अपने नीजि सुख-चैन को छोड़कर समाज के सुख-चैन के लिये अपने आपको समर्पित करें इसी से एक उज्ज्वल भविष्य की आशा बंधती है।



ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दावी जानकी के प्रेरणादायी उद्बोधन को सुनते हुए मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी।

मुझे आशा है कि गुजरात की धरती पर ये संस्कार सरिता भिन्न-भिन्न रूप से प्रगट होती रहे। इस संस्कार सरिता में सबको (शेष पेज 3 पर)



मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी युनिवर्सिटी कन्वेन्सन सेन्टर के विशाल आडिटोरियम में उपस्थित गणमान्यजन को सम्बोधित करते हुए।

उसे माफ कर जिंदगी जीएं..

दो परिवार के बीच लम्बे समय से मनमुटाव था, एक दूसरे के अच्छे-बुरे प्रसंग में जाने-आने से कतराते थे। एक सामाजिक कार्य करके मन में दोनों परिवार में आये मनमुटाव को दूर करने का उमंग उत्साह आया और दोनों की मुलाकात करने का समय निश्चित कर दिया। दोनों परिवार में से एक परिवार वालों ने कुछ भी चर्चा हो उसके पहले ही अपने पर्स में से एक कांच का गिलास निकाला और दूसरे परिवार के सदस्य तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं के समक्ष कांच के गिलास को जोर से फेंका। गिलास के टुकड़े-टुकड़े हो गये। गिलास तोड़ने वाले परिवार के सदस्य ने कहा, इन टुकड़ों को फिर से मुझे पूरा गिलास बनाकर दो और फिर करो मनमिलाप की बात, और वे चलते बने।

क्या जिंदगी हठ, रौब, जिद, दूराग्रह के प्रयोगों के लिए है? क्या मानव-मन कटुता के बीज को पल्लवित करने के लिए है? क्या मानव को यह जीवन जगत के साथ वैर लेने के लिए मिला है? क्या अस्खड़पन के अलावा जीवन में संग्रह करने जैसी दूसरी चीज मानव के पास नहीं है? क्या सम्बंधों को कमजोर करने के लिए हम बनाते हैं? ऐसा लगता है कि जिंदगी की पाठशाला में अशिक्षित विद्यार्थी है। जिंदगी की स्लेट में हमें रेखा खींचने तो आता है लेकिन रेखा को मिटाना नहीं आता। विचार करें, जन्म-जन्म की बात करें तो पूर्वजन्मों में अपने मन की स्लेट पर कितनी सारी रेखाएँ खींची होंगी। फिर भी ईश्वर ने उस रेखा को खत्म कर साफ करके जिंदगी की साफ सुथरी स्लेट के साथ हमें धरती पर भेजा। उस साफ स्लेट पर लिखा था कि 'मनुभव'.... मनुष्य बनना....। लेकिन उस तरफ अपनी नजर ही नहीं गई।

सम्बंध मजबूत करते सालों साल लग जाते हैं लेकिन उसे तोड़ने के लिए मात्र एक सेकण्ड की जरूरत होती है। जैसे सम्बंधों में निकटता ज्यादा होती है वेसे कड़वाहट होने की शक्यता भी ज्यादा होती है। निकट के सम्बंधों में मनुष्य क्षमादान करने में कंजूसी करता है।

दुःखी, टूटे हुए, व्यथित व्यक्ति को क्षमायाचना करने का पत्र कैसे लिखा जाए उसका मार्गदर्शन ब्रायन ट्रेसी ने बताया है। क्षमा याचना करने का पत्र लिखने के लिए आराम से शांत मन से क्रमशः तीन हिस्से में बाँटना चाहिए। प्रथम हिस्से में तुम्हें कहना चाहिए कि जिस कारण से तुमने मुझे दर्द दिया उसके लिए मैं आपको क्षमा करता हूँ और आपसे भी माफी मांगता हूँ। पत्र के दूसरे हिस्से में आप ऐसी बातों का वर्णन कर सकते हो जिसके कारण आप उस व्यक्ति से नाराज हैं। ऐसा लिखते समय आपको बहुत ही संयम रखना चाहिए। लिखते-लिखते मनुष्य बिफरता है और नये आरोपों का उपयोग करता है। मुद्दे की बात तथा स्नेह और भाव भरी लिखत हो। शुभभावना की भूमिका का सृजन करती हो।

पत्र के तीसरे भाग में समापन ऐसे शब्दों के साथ करना चाहिए कि मैं आपको हृदयपूर्वक शुभभावना-शुभकामना देता हूँ। ध्यान रहे कि ऐसा पत्र लिखने के बाद उस व्यक्ति की प्रतिक्रिया की राह देखते नहीं रहें और प्रतिक्रिया न मिलने पर दुःखी भी न हों। आपका काम है शुभेच्छा के बीज बोना। शुभेच्छा फलीभूत होने के लिए भी अनुकूल वातावरण, हवा, पानी, खाद आदि की आवश्यकता रहती है। मानव को बदलना या मानव खुद बदलने का काम, बिजली का बल्ब ऑन कर प्रकाश करने जितना सहज नहीं है।

खुद की जिंदगी को नयी व भव्य दिशा देने के लिए ब्रायन ट्रेसी के दिये सुझावों को अमल करने जैसा है -

1. आज ही एक संकल्प करो कि आप एक प्रसन्न इन्सान बनेंगे। आप स्वयं से पूछो कि मेरी जिंदगी में ऐसा कौन सा और क्या कारण है, जिसकी वजह से अप्रसन्न और तनावग्रस्त स्थिति बनती है?
2. आपके बचपन का ऐसा कोई प्रसंग याद करो जिसके कारण आप आज भी नाराज हो। अब उस बीती घटना को आप सकारात्मक दृष्टि से देखो और उसे एक मूल्यवान अनुभव समझो।
3. आपकी जिंदगी के ऐसे कौन-कौन से क्षेत्र हैं, जिसके कारण आपमें नाराजगी और कटुता है और आज भी कोई (शेष पेज 4 पर)



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

लेकिन विचार चलता है कि सोलह घण्टा क्या करें। अटेन्शन है चलते फिरते खास नहाते खाते बाबा की याद रहे। यह ८४ वां जन्म है, इसमें एक सेकण्ड भी बाबा को भूलना भूल है। अगर कोई सेवा है तो कर्मयोगी हैं। कर्म करते लगन है कर्मातीत अवस्था को पाना है। यह लगन की अग्नि पुराने विकर्म विनाश कर देती है। हिसाब-किताब चुकतू कर फ्री हो जाते हैं। हम पद्मापदम भाग्यशाली हैं जो यज्ञ के आदि से जब शिव बाबा ब्रह्मा तन में आया तब से उसको देखा।

मुरली सुनते अपने आपसे पूछना कि सच्ची-सच्ची याद क्या है? जैसे रस के घोड़े इधर-उधर नहीं देखते। बाबा कहते यह भी तुम्हारी रस चल रही है, लेकिन कई बच्चों को माया ऐसी आती है जो रस से बाहर निकल जाते हैं। जो बाबा की श्रीमत है या डायरेक्शन है, उस पर चलना ही आज्ञाकारी बनना है। आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार तीनों को अपने में देखो, जैसे चार विषय हैं वेसे यह तीन धारणाएँ हैं। आज्ञाकारी सदा ही हल्का रहता है, भारी नहीं होता है। जो श्रीमत पर चलता है वह थकता नहीं है। बाबा जो महावाक्य उच्चारण करता है वह

श्रीमत पर चलने वाला कभी थकता नहीं है

बाबा ने कहा है आठ घण्टा याद करो, नींद कम करो।

कान सुनते हैं। इन बातों को भूल और क्या बातें याद करें। रस का घोड़ा अपनी लाइन में दौड़ता है आपस में टक्कर नहीं खाते हैं। अटेन्शन है मुझे चौड़कर पहुंचना है, पीछे नहीं जाना है। तो आज्ञाकारी वह बनता है जो वफादार है। एक बाबा दूसरा न कोई। आज्ञाकारी, वफादार नेचुरल ईमानदार होता है। एक कौड़ी भी इधर-उधर नहीं करेगा। आज्ञाकारी के सिर पर बाप का हाथ है। वफादार है तो बाबा को विश्वास है कि कहीं भी इसकी बुद्धि लटकेगी, चटकेगी नहीं। जीवन यात्रा में बुद्धि कहां लटकी है या मेरे पीछे कोई लटकता है, तो आदत खराब है। बाबा ने कहा था याद अव्यभिचारी हो। पतिव्रत व पिताव्रत में रहें। कैसी भी परीक्षा आये, पिताव्रता में आज्ञाकारी हैं, सतीव्रत में ईमानदार व वफादार हैं। जितना ज्ञान की गहराई में जायेंगे, योगयुक्त रहेंगे। बाबा के शब्द सिर्फ रिपीट नहीं करेंगे। उस पर चलता हुआ देख सबके लिए इजी हो जायेगा। ईमानदारी रहती है। मुझे नशा है बाबा मुझे जनक नाम से बुलाता था, जनक माना विदेही और ट्रस्टी। राजाई में बैठे हैं। योग से राजाई पद है। खाते-पीते, चलते-फिरते बाबा ही खिला रहा है। ईमानदार हैं तभी ट्रस्टी बन सकते हैं। बाबा ने माताओं को ट्रस्टी बनाया और खुद न्यारा हो गया। ब्रह्मा बाबा सदा विदेही और ट्रस्टी रहा। कारोबार, सम्बन्ध में सदा ट्रस्टी, मेरा कुछ नहीं है, इतना तिनके मात्र भी नहीं है। भगवान भी देख रहा है,

आप भी देख रहे हो। थोड़ा जो संकल्प और समय मेरे पास है, वह भी भगवान छोड़ता नहीं है। आत्मा को परमात्मा का हुकम मिला हुआ है, विदेही रहे। बाबा जो कहता है वह क्या हम प्रैक्टिकल कर रहे हैं! ब्रह्मा बाबा ने प्रैक्टिकल किया है तभी इतनी वंशावली पैदा हुई है। प्रैक्टिकल ब्राह्मण माना क्या, जो सत्यनारायण की अच्छी कथा करे, शुद्ध आहारी हो, सिम्पल रहकर सैम्पल बने।

बाबा कहते हैं बच्चे, गुणों को धारण करना है, अवगुणों को त्यागना है। आजकल बाबा मुरली में बहुत अच्छी चेतावनी दे रहे हैं। काम, क्रोधवश ऐसा कोई काम नहीं करना जो पश्चाताप करना पड़े। काम तो महाशत्रु है ही लेकिन क्रोध भी काम नहीं है। पहले जब बाबा के पास आते हैं तो बाबा के प्यार की आकर्षण से बाबा की गोद में आ जाते हैं। गोद की आकर्षण खींचती है। जैसे मनुष्य पुराने कर्मों के हिसाब किताब से जन्म लेते हैं। हम पूर्व जन्म के आधार पर जन्म नहीं लेते हैं। कल्प पहले की तरह बाबा के पास आ जाते हैं इसलिए बाबा के प्यार में बाबा के सिवाए और कोई याद आता ही नहीं। गोद के बच्चे को नशा रहता है हम किसकी गोद में आये हैं। सच्चा पुरुषार्थ, निश्चय और पवित्रता का बल वैजयन्ती माला का मणका बना देता है। कभी कोई फालतू ख्याल नहीं आ सकता है। चढ़े तो चाखे प्रेम रस, गिरे तो चकनाचूर।



दादी इदम्बहिनी, अति मुख्य प्रशासिका

सभी के मन में अभी भी कौन याद है? बापदादा ही याद है, क्योंकि मेरा बाबा है ना। तो मेरी चीज तो भूलने वाली है ही नहीं। भूल सकती है? कभी-कभी भूल जाता है! बाबा से तो बहुत प्यार है तो उसे दिल में बिठाया है ना। जो बात दिल में बैठ जाती है वो तो भूल ही नहीं सकती और बाबा हार्ट में बैठा है तो आप कम्बाइण्ड हो गये। हमारा कम्बाइण्ड ऑलमाइटी अर्थारिटी है, तो कभी भी कोई तकलीफ होती है तो जो नजदीक होता है, उसको याद किया जाता है। तो आप क्या करते हो? जब अकेले हो जाते हो तब माया आ जाती है, इसलिए कभी अकेले नहीं बने। नहीं तो कमजोर हो जायेंगे। तो यह पाठ पक्का करो तो माया की हिम्मत ही नहीं होगी क्योंकि आप कम्बाइण्ड हो तो माया से डरने की क्या बात है। तो माया आती है माना आप अपने को अकेला समझते हो। तो अभी माया को गुडबाय करो तो नो प्रॉब्लम। बाबा चाहता ही यह है कि हमारा एक-एक बच्चा सदा हर्षित चित्त, मायाजीत हो। तो अभी यहाँ मधुबन में कम्बाइण्ड रूप की ट्रायल करना। तो नो प्रॉब्लम। आज अगर प्रॉब्लम को विदाई दे दो तो बाबा खुश हो रहा है, दिखाई दे रहा है बाबा का मुस्कराता हुआ चेहरा! जैसे अभी सभी का भी चेहरा बहुत अच्छा लग रहा है, सदा ऐसे ही रहें तब कहेंगे मायाजीत। बाबा ने एक

शक्तियां व धारणाएं परमात्म-याद में समाई हुई हैं

सेकेण्ड में इस दृश्य को फोटो निकाल लिया, आप भी अपने दिव्य दृष्टि में यह फोटो खींच लो। आपको सदा खुशी मिल गयी, बाबा सदा साथ है माना सदा खुशी आपके साथ है। तो यह साथी साथ देगा माना सहयोग देगा लेकिन साथ नहीं छोड़ना। यह सहज है ना, अब पत्र नहीं लिखना बाबा यह है, यह है...। दिल में ही बाबा बैठा है तो दिल से बाबा बोलो तो बाबा सेवा के लिए हाजिर हो जायेगा।

अभी करना क्या है? अभी यही खुशी का, सुख का वायुमण्डल फैलाओ क्योंकि दुनिया में दुःख बहुत बढ़ रहा है। लेकिन है तो हमारे भाई ही ना, तो जो दुःखी हैं उन्हों को सुख का वायुमण्डल दे। आपको कोई भी देखे, कितना भी मुझाया हुआ हो आपको देख करके मुस्कराने लगे, अब ऐसी सेवा करके दुनिया को परिवर्तन करना है। इसके लिए मैं अपना फेस, अपनी चलन, अपना बोल जो भी है वो ऐसा करूँ जो हमको देखके दूसरे भी खुश हो जायें। तो यह सर्विस करनी आती है, योग में बैठके सकाश देना यह आता है ना, तो आत्माओं को परमात्मा से हमको सकाश मिल ही रही है। तो वो परमात्मा की सकाश जो है अपने द्वारा औरों को दो। सारी दुनिया आपके लिए सकाश लेने के लिए तरसती है क्योंकि दुःख तो बढ़ ही रहा है, देखते हैं और सुख चाहते सभी हैं तो आप द्वारा वो सुख और शान्ति की जो सकाश जायेगी ना तो दुनिया परिवर्तन हो जायेगी। तो अभी ऐसी सेवा करेंगे ना, ऐसे नहीं जो टीचर्स हैं वही इस सेवा के निमित्त हैं, हम एक-

एक सेवा के लिए निमित्त हैं।

सुबह उठके मन को बिजी रखने का प्रोग्राम बनाके उसी अनुसार सारे दिन चलते रहो, इजी या थोड़ा डिफिकल्ट? जिन्होंने हाथ उठाये उनके तो प्रॉब्लम फिनिश हो गये, तो अभी जाकर अपने क्लासेज में भी सुनायेंगे। तो सभी आल वर्ल्ड नो प्रॉब्लम हो जायेंगे।

हमारे ख्यालों में भी और ख्वाबों में भी एक बाबा ही है और बाबा की हम बच्चों प्रति यही आश है कि तुम मेरे मैं तेरा, न तुम मेरे को भूलो, न मैं तेरे को भूलूँ-यही बाबा चाहता है। जब बाबा याद होगा तो नैचुरल बाबा की याद से जो हम अपने जीवन में शक्तियां या धारणाएँ चाहते हैं, वह बाबा की याद में समाई हुई हैं ही। तो बाबा कहते हैं कि बस और कुछ नहीं करो, मुझे भूलो नहीं क्योंकि मेरे को भूलने से ही आपको इतनी मेहनत करनी पड़ती है, अगर तुम मेरी याद में रहो तो आज कोई कामना उठी या क्रोध आ गया, लोभ आ गया... तो इस मेहनत से छूट जायेंगे और मेरी याद में खो जायेंगे, बस। जो प्यार के आनंद में खोया हुआ होता है उसको कोई भी बाहर की आकर्षण खींचती नहीं। तो बाबा की भी यही आशाएँ हैं और हम सबकी भी वही आशा है। लेकिन उसको प्रैक्टिकल में लाने के लिए याद भूलें नहीं। इसके लिए बाबा ने अभी तो बहुत सहज तरीका सुना दिया। कोई बहानेबाजी इसमें नहीं चल सकती, बाबा ने इसीलिए पांच बारी ट्राफिक कंट्रोल रखा कि भूल भी जाये तो फिर से याद आ जाए।

विचार, वाणी और ...

संसार को एक बनाने के लिये कार्य कर रहा है। हम एक परमात्मा पिता के बच्चे हैं, ये संस्कार हम डालकर चलेंगे तभी संसार एक बनेगा, श्रेष्ठ बनेगा। श्रेष्ठ संस्कार से ही बनेगा श्रेष्ठ संसार।

ब्रह्माकुमारी संस्था के सचिव ब्र.कु.निर्वैर ने कहा कि जब तक हमारे अंदर नैतिक मूल्य नहीं आये तब तक भारत फिर से स्वर्ण नहीं बनेगा। इसके लिये युवाओं व बच्चों को राजयोग का प्रशिक्षण देना आवश्यक है। इससे भारत सर्वश्रेष्ठ बन जायेगा, भारत विश्व का नेतृत्व करेगा और इसके लिये नरेन्द्र मोदी जी भी निमित्त बनेंगे। हमारे यज्ञ में आज का दिन स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। संगम तीर्थ धाम आगे चलकर लाइट हाउस बन सारे विश्व की सेवा के लिये निमित्त बनेगा।

ब्रह्माकुमारी संस्था के आतिरिक्त सांचा ब्र.कु.बृजमोहन ने कहा कि गुजरात ने हमारे देश की परम्परा व सभ्यता को बनाये रखा है। गुजरातियों का रास प्रसिद्ध है। रास का मूल अर्थ ही यह है कि सभी युवा भाई-बहनें देह के भान को भूलकर कदम से कदम मिलाकर रास करें। ब्रह्माकुमारी संस्था में

संस्कार मिलन की रास सिखाई जाती है। गुजरात की धरती पर गांधीजी ने सत्य और अहिंसा का पाठ पूरे विश्व को सिखाया। आज भले ही भौतिक विकास हुआ हो लेकिन समाज में मूल्यों की गिरावट होती जा रही है। आज प्रत्येक व्यक्ति को अंदर से जागने की आवश्यकता है। संगम तीर्थ धाम का शुभारंभ युवाओं को प्रशिक्षण देने के लिए किया जा रहा है ताकि विश्व से मानसिक प्रदूषण को समाप्त किया जा सके।

ब्रह्माकुमारी संस्था के युवा प्रभाग की अध्यक्ष दादी रतनमोहिनी ने कहा कि युवा शक्ति को आध्यात्मिकता द्वारा सकारात्मक दिशा देने के लिए यह धाम सतत प्रयत्नशील रहेगा।

गुजरात स्थित ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु.सरला ने कहा कि आध्यात्मिक युवा ही समाज व देश का हित कर सकता है।

ब्रह्माकुमारी संस्था के युवा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.चंद्रिका ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था के पास डेढ़ लाख से भी ज्यादा बाल ब्रह्मचारी युवा हैं। युवा प्रभाग का लक्ष्य ही यही है कि देश के ज्यादा से ज्यादा युवाओं को विश्व परिवर्तन के लिए तैयार करें। आज खुशी का दिन है कि युवा प्रभाग का वह सपना साकार हुआ और देश के युवाओं को सुसंस्कृत करने की शिक्षा देने के लिए संगम तीर्थ धाम का उद्घाटन होने जा रहा है।

मुकेश पटेल ने कहा कि ये भवन डिवाइन पावर हाउस बनेगा। यहाँ पर युवा शक्ति व आध्यात्मिक शक्ति का मिलन होगा।

दादी जानकी ने ब्रह्माकुमारी संस्था के उन भाई-बहनों को सम्मान सर्टिफिकेट दिया जिन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान में पच्चीस साल पूर्ण किए हैं।

शुभकामनाएँ

सर्व वें कल्याणकारी परमात्मा शिव और दादीजी की सबल प्रेरणा से प्रारंभ हुई, जन-जन की चहेती, उत्कृष्ट चिन्तन



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

की प्रबल प्रेरक 'ओमशान्ति मीडिया' अपनी सफल यात्रा के 13 वर्ष पूर्ण कर 14 वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। यह जानकर अति हर्ष हो रहा है कि ईश्वरीय अनुभवों को राजयोगी भाई-बहनों के माध्यम से सजीव अभिव्यक्ति देने वाली इस पत्रिका की मांग देश-विदेश में दिनोदिन बढ़ती जा रही है।

समयानुकूल ज्ञान, योग, धारणा और सेवा जैसे गूढ़ समझे जाने वाले विषयों को सरल, सुबोध और सुस्पष्ट व्याख्या देने वाली, जन-जन के हृदय को ज्ञान-अमृत से सींचने वाली इस पत्रिका को घर-घर पहुंचाने का कार्य आप सभी राजयोगी भाई-बहनें उमंग-उल्लास से करते रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे - यह मेरी शुभकामना है। श्रेष्ठ वृत्ति, दृष्टि, कृति की ओर प्रेरित करने का यह पत्रिका अत्युत्तम आधार है।

इस 'ओमशान्ति मीडिया' में जो भी भाई-बहनें अपना अमूल्य समय निकालकर लेख भेजते हैं, जो इसे सुंदर रूप देकर सब तक पहुंचाने का कार्य करते हैं, साथ-साथ जो इसे पढ़कर अपने चिन्तन को ऊर्ध्वगामी और शक्तिशाली बनाते हैं उन सभी को बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि ऐसी सेवाएं निरंतर करते हुए हर गाँव तथा हर व्यक्ति तक यह सुंदर पत्रिका पहुँचाकर आप उन्हें दिव्य जीवन बनाने के लिए प्रोत्साहित करते रहेंगे। यह भी बहुत बड़ा पुण्य है क्योंकि इसके माध्यम से अनेकों को जीवन में शांति व खुशी की सच्ची राह प्राप्त होती है।

अभी वर्ष 2013-2014 हेतु ओमशान्ति मीडिया के सभी प्रिय पाठकों से मैं कहूँगी कि आत्मिक उन्नति की ओर ले जाने वाले इस श्रेष्ठ माध्यम से जन-जन को ईश्वरीय संदेश देते हुए मानव मन को सकारात्मक बनाने की सेवा कर बापदादा का नाम बाला करें और बापदादा के साथ सर्व की दुआओं के पात्र बनें। दिनोदिन इसकी संख्या अधिकाधिक होती रहे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ...।



रायपुर (छ.ग.)। नवनिर्मित विशाल स्टेडियम में आईपीएल-6 का मैच खेलने आए प्रसिद्ध भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी वीरेन्द्र सहवाग को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब्र.कु.सविता।



ड्राइवर् (भरूच)। ब्र.कु.प्रभा द्वारा समाज के सभी वर्गों की निःस्वार्थ भाव से आध्यात्मिक सेवा करने के लिए सम्मानित करते हुए रोटरी क्लब।

ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी, मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए।

आचमन लेने का सौभाग्य प्राप्त हो और हर किसी के जीवन में ये एक नई शक्ति के रूप में उभरे।

ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि आज दुनिया का कोई कोना ऐसा नहीं होगा जहाँ गुजराती न हो। हमारे ब्रह्माकुमारीज में भी कई गुजराती



मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को ब्रह्माकुमारी संस्था के महासचिव ब्र.कु.निर्वैर संगमतीर्थ धाम का प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए।

बहनों के पुरुषार्थ से विदेशी की सेवा को बल मिला है। आज चंद्रिका बहन ने जिस सेवा का आरंभ किया है वह काफी सराहनीय है। हमारा ईश्वरीय यज्ञ धर्म, जाति, भाषा, प्रांत जैसे हर प्रकार के भेदों से परे होकर पूरे

बनाये रखा है। गुजरातियों का रास प्रसिद्ध है। रास का मूल अर्थ ही यह है कि सभी युवा भाई-बहनें देह के भान को भूलकर कदम से कदम मिलाकर रास करें। ब्रह्माकुमारी संस्था में

सद्गुणों से जीवन का श्रृंगार करें

जीवन रूपी वृक्ष पर यदि विभिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे पुष्प खिले हों तो उनकी सुगंध अवश्य ही समस्त विश्व में श्रेष्ठ चरित्र की सुवास फैलाएगी और उनका जीवन जिसमें कांटे उगे हों, अवश्य ही स्वयं को व दूसरों को चुभ-चुभकर लहलुहान करेंगे। कांटे जहाँ हों, वहाँ चैन कहाँ और जहाँ पुष्प खिलें हों, वहाँ कड़वाहट कहाँ! सद्गुण युक्त जीवन स्वयं को भी व दूसरों को भी प्रिय लगता है। सद्गुण, जीवन रूपी इमारत में जड़े हुए बहुमूल्य हीरे-मोती हैं। सद्गुण-युक्त जीवन का मूल्य आँका नहीं जा सकता। तराजू में यदि एक ओर विश्व की समस्त पूँजी रखी जाए और दूसरे पलड़े पर सद्गुण रूप जीवन हो तो वह जीवन ही अधिक मूल्यवान होगा।

जहाँ एक ओर जीवन में हम अन्य अनेक वस्तुओं को मूल्य देते हैं वहीं श्रेष्ठ गुणों को भी महत्व दें। क्योंकि हम जितना जिस वस्तु को महत्व देते हैं, वह वस्तु उतनी ही हमारे जीवन में समाने लगती है। वे सद्गुण हैं -शालीनता, सन्तुष्टता, सादगी, निर्भयता, गंभीरता, साहस, आत्म-सम्मान, धैर्यता, सरलता, निरहंकारिता, दया और प्रेम। क्या इनमें से किसी भी एक गुण की

कीमत को आंका जा सकता है? क्या साहस को करोड़ रुपये देकर खरीदा जा सकता है, क्या निर्भयता की कीमत चुकाई जा सकती है, क्या धैर्यता की तुलना धन से की जा सकती है और क्या संतुष्टता धन से प्राप्त हो सकती है? सभी कहेंगे नहीं। तो अथाह कीमत है जीवन में सद्गुणों की। तो आओ चिन्तन करें कि इन सद्गुणों को जीवन में कैसे लायें।

जिस घर में सभी सदस्य गुणवान हों अथवा गुण धारण करने के लिए सदा ही प्रेरित हों, वह परिवार समाज के लिए आदर्श व अनुकरणीय बन जाता है। परन्तु आश्चर्य की बात है कि वर्तमान समय में अधिकतर लोग जीवन में गुणों की धारणा के प्रति सचेत नहीं हैं। यदि किसी में कोई गुण नहीं है, तो वह उसे धारण करने का प्रयास ही नहीं करते। परन्तु विवेकशील प्राणी को स्वयं को सद्गुणों से सम्पन्न बनाने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

एक गुणवान व्यक्ति यदि गरीब भी है तो वह उस धनवान से अच्छा है जो धन के नशे में गुण रूपी मोतियों की माला अपने गले में नहीं डालता। गुण मनुष्य को आत्म संतोष प्रदान करते हैं और जीवन में खुशी व शान्ति का अनुभव देते हैं और वह मनुष्य जिसका चेहरा सदा ही मुरझाया रहता हो, जिस पर सदा ही

मनहूसियत सवार रहती है, कभी भी जीवन का आनंद नहीं ले पाता। इसलिए जीवन को सद्गुणों से इतना श्रृंगार करो कि संसार के समस्त कृत्रिम श्रृंगार नीरस पड़ जाएं।

शालीनता - मानव एक सभ्य प्राणी है, उसमें आत्म-सम्मान की भावना कूट-कूट कर भरी है, अतः प्रत्येक मनुष्य को अपना खान-पान, बोल-चाल, व्यवहार-विचार सभी रॉयल बनाने चाहिए। हमारा व्यवहार ही ऐसा हो कि देखने वाले हमें सभ्य मनुष्य मानें। व्यवहार में जल्दबाजी, दूसरों के प्रति अपमान-जनक शब्दों का प्रयोग, अशिक्षित लोगों जैसा उठना, घड़ी-घड़ी क्रोध, दूसरों की बातों को धैर्यता से न सुनना, बिना पूछे ही बोलना या ज्यादा बोलना - ये सब शालीनता नहीं है। एक शालीन व्यक्ति को शालीनता से ही चलना चाहिए। दूसरे भले ही हमसे कैसा भी व्यवहार करें, परन्तु हम अपनी शालीनता न छोड़ें। एक शालीन व्यक्ति दूसरे से कुछ भी माँगता नहीं। वह थोड़े में ही संतुष्ट रहता है। दूसरों द्वारा अपमानित होने पर भी वह उत्तेजित नहीं होता। उसके व्यवहार में महानता के दर्शन होते हैं, वह न बुरा बोलता, न बुरा सुनता है। तो इस प्रकार शालीनता राजाई संस्कार है -यह जानकर इसे जीवन में सहज व स्वाभाविक रूप दे देना चाहिए।

चरित्र का महत्व

एक बार चैतन्य महाप्रभु से उनके एक शिष्य ने कहा, 'प्रभु! इतने लोग भाव-विभोर होकर आपके पास कीर्तन करते हैं, परन्तु उनका जीवन वहीं का वहीं क्यों बना रहता है? व्यक्तित्व और विकसित क्यों नहीं होता? चैतन्य महाप्रभु ने कहा, 'दरअसल उन लोगों में दिखावा बहुत है पर किया कुछ नहीं जाता है। जीवन असंयम के छिद्रों से भरा पड़ा है, चरित्र कमजोर है। इसलिए ऊर्जा संचित नहीं हो पाती है और सब कुछ होने के बावजूद व्यक्तित्व बदलता नहीं है। अध्यात्म पाने की पहली शर्त है - चरित्रवान होना।' शिष्य की जिज्ञासा बढ़ती चली गई। यह चर्चा और शिष्य भी सुन रहे थे। वे समझ गए कि आज कुछ विशेष जानकारी मिलने वाली है। वे उन्हें घेरकर बैठ गए। उस शिष्य ने फिर पूछा, 'प्रभो! चरित्र व्यक्तित्व का मुख्य केन्द्र है, पर कैसे?' शिष्य के प्रश्न को सुनकर महाप्रभु ने एक लंबी सांस ली और बोले, 'वत्स! बदलना कौन नहीं चाहता है? मगर धैर्य किसके पास है, कौन इसके लिए एक लंबी प्रतीक्षा में खड़ा रहना चाहता है। सबसे पहले हमें चरित्र संबंधी धारणा को बदलना चाहिए। हमने चरित्र को एक छोटे से दायरे में सीमित कर दिया है। जबकि चरित्र की सीमाएं दूर-दूर तक फैली हुई हैं। इसकी जड़ें व्यक्तित्व की गहराई में धंसी हुई हैं। लोग आमतौर पर चरित्र को स्त्री-पुरुष सम्बंध के संदर्भ में देखते हैं। लेकिन हम हर व्यक्ति से कैसा व्यवहार करते हैं, यह भी हमारे चरित्र पर ही निर्भर है।

सात दिवसीय ...

उन्हें ब्रह्माकुमारी संस्था से मानसिक शांति व जीवन जीने की नई कला सीखने का अवसर मिला है। मुझे यह महसूस होता है कि यह मेरा आध्यात्मिक परिवार है।

ब्र.कु. योगिनी, ब्र.कु. गोदावरी, पूर्व मुख्य न्यायाधीश वी. ईश्वरैया ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया।

ओम शान्ति मीडिया के सम्पादक ब्र.कु. गंगाधर ने स्वर्णिम युग लाने के लिए वैचारिक क्रांति लाने पर बल दिया।

उसे माफ कर..

व्यक्ति ने कुछ किया या नहीं किया उनके लिए उसे दोषी मानते हो। जो कुछ भी हुआ उसकी जवाबदारी स्वीकार कर और जिंदगी को फिर से नया रूप देने की शुरुआत करो।

4. आपके भूतकाल में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे आपने माफ नहीं किया है? भूतकाल में ऐसा कौन सा अनुभव है जो आपको क्रोधित कर देता है? अगर ऐसा कोई भी अनुभव रहा हुआ हो तो उसे सदा के लिए विस्मृति की शिला के नीचे दफना दें।

5. हर बात को स्वयं पर आक्रमण के रूप में न लें। आज के बाद अगर आपको कोई मान सम्मान न दे तो भी उसे भूलकर अपने कार्य में लगे रहें।

6. बीते हुए समय के प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को माफ करने का निर्णय कर लें, जिसके लिए आपके मन में आज भी नकारात्मक भावना है। आप खुद को तथा उस व्यक्ति को जिससे आपकी नाराजगी है, मुक्त कर दो।

7. आपके द्वारा हुई प्रत्येक भूल के बदले आप स्वयं को माफ कर दो। अगर आवश्यकता हो तो दूसरे व्यक्ति के पास जाकर भी माफी माँग सकते हो। इस तरह से स्वयं को मुक्त करते जाएँ।

प्रभु ने हमें इस धरा पर खुश रहने के लिए कीमती गुणों की झोली भरने के लिए भेजा है। इन्सानियत के कल्पवृक्ष को पूरी ताकत के साथ विकास करके देखो।

हम सुधरेंगे ...

का चक्र चलता रहता है, आयु व्यक्त का क्षरण करती है। कभी लाभ, कभी हानि, कभी सुख कभी दुख, कभी जय तो कभी पराजय समय के अनुसार चलती है। जो व्यक्ति विनम्रता के साथ इन सारतत्वों को स्वीकार करता है और समदृष्टि रखता है, वह ही उन्नति करता है। मानव की श्रेष्ठ प्रवृत्तियाँ समय के प्रभाव से मुक्त होती हैं। बुढ़ापा आने पर शरीर निर्बल हो जाता है, लेकिन अच्छे संकल्प निर्बल नहीं होते। उस आयु में समाज के पथ प्रदर्शक बनकर रहें। आयु पूर्ण करने से पूर्व लोगों को धर्म के मार्ग पर लाने का प्रयास निरंतर करते रहें ताकि एक अच्छे विश्व का निर्माण हो सके।

लक्ष्य रखें कि मुझे किसी भी बात से परेशान नहीं होना है

प्रश्न :- हमें कुछ ऐसा फील होता रहता है कभी डर लग रहा है तो कभी बहुत खुशी हो रही होती है, इसका कारण क्या है?

ब्रह्माकुमारी शिवानी :- दोनों चीजों में आपको अपने शरीर पर उसका प्रभाव दिखाई देगा। मन नॉर्मल नहीं रहता है बाकी दुःख, आवेश में आपकी हृदय स्पंदन दर नॉर्मल रहती है? नहीं। डर में भी आपकी हृदय की गति नॉर्मल नहीं रहती है। माना ये सब चीजें नॉर्मल नहीं है। ये सब असाधारण है लेकिन हम सोचते हैं कि ये नॉर्मल है। मन पर इसका कितना गहरा प्रभाव पड़ा शायद ये तो हमें बाद में पता चलेगा लेकिन शरीर पर तो स्पष्ट दिखाई दे रहा है। आप देखेंगे कि इससे आपके हृदय की स्पंदन दर काफी तेज हो जाती है। अब ये तेज हो गयी है तो हम कहते हैं कि ये नॉर्मल है। परिस्थिति तो निश्चित नहीं होती है अब चाहे मेरे आस-पास सारा दिन कुछ भी हो जाये। मुझे सिर्फ ये ध्यान रखना है कि मुझे अपनी स्थिरता को नहीं खोना है। इसका यह मतलब नहीं है कि मैं कुछ भी न करूँ, मैं किसी को कुछ न कहूँ, बच्चे ने कुछ गलत किया मैं कहूँ या नहीं कहूँ। यदि हम कहते हैं तो हमारे पास दो विकल्प हैं या तो गुस्सा होकर कहे या फिर स्थिर होकर स्नेह से कहें, ये संभव है या नहीं है? हम सोचते हैं कि जवाब देना, गुस्से से बोलना, परेशान होना यह किसी व्यक्ति का अनुशासन है।

आप एक दिन के लिए इसे ट्राय करके देखो, आपको किसी से काम करवाना है तो भले आप करवाओ लेकिन परेशान हुए बगैर और इसको सिर्फ एक दिन आपको प्रयोग करके देखा है। आज एक दिन चाहे मेरे आस-पास कुछ भी हो जाये मुझे परेशान नहीं होना है। हमें यह याद रखना



है कि एक दिन के लिए हमें स्थिर रहना है। बाद में आप यह अनुभव करेंगे कि यह तो बहुत आसान है। क्योंकि इसे हमने आज तक कभी किया ही नहीं था। ट्रैफिक में रूके हुए हैं तो हमारे कौन से संकल्प चलते हैं ये क्या हो रहा है, कैसे हो रहा है, किसी ने रांग साइड से ओवरटेक कर दिया, कैसे चलते हैं पता नहीं, इनको लाइसेंस कौन दे देता है, ये तो ऐसे ही है तो इस प्रकार के हमारे संकल्प चलते हैं। हमें सिर्फ एक दिन ये नहीं करना है। सब कुछ करना है सिर्फ एक दिन परेशान नहीं होना है, स्टेबल रहना है। इसके लिए कोई विधि या कोई तरीका सीखने की आवश्यकता नहीं है इसको सिर्फ याद रखना है कि मुझे एक दिन स्टेबल रहना है। तो आप निश्चित रूप से पायेंगे कि इससे आपकी बहुत सारी एनर्जी बच जाती है। ये स्थिरता हमें कितना बल देती है, कितना एनर्जी देती है और कितना कुछ और करने के लिए कहती है ये जब हम अपने साथ प्रयोग करेंगे तब पता चलेगा। यह प्रयोग हमारे लिए होगा आप जो कुछ अनुभव कर रहे हैं, जो कुछ भी आप समझ पा रहे हैं उसे हमारे साथ जरूर शेयर करें।

जब हम साइलेंस में बैठते हैं, वो डीप जब हमारे सबकॉन्सियस में बैठने लगता है तो उसका प्रभाव बहुत ज्यादा होता है।

राजयोग ड्रिल:- आराम से बैठें और अपने थॉट्स को.... कॉन्शियसली क्रियेट करने का प्रयास करें....लेट मी लुक माईसेल्फ.... द क्रियेटर... द मास्टर.... द पावरफुल बीइंग...आई.... द.... क्रियेटर ऑफ एवरी थॉट....हैज ए च्वाइस....मेरे आस-पास... चाहे कुछ भी हो जाये....आई चूजस्टेबिलिटी...चाहे कोई कुछ भी कहे... आई चूज.... स्टेबिलिटी....और जैसे ही....आई रिमेन स्टेबल.... परिस्थिति.... परिवर्तन हो जाती है....एक क्षण के लिए....अपने आपको....उस व्यक्ति के सामने देखें....जो आज दिन तक हम समझते थे....कि ये मुझे गुस्सा दिलाता....ये मुझे डिस्टर्ब करते....अपने आपको उनके सामने देखें....वो वैसे ही हैं....वैसे ही बोल रहे हैं....वैसा ही व्यवहार... लेकिन अपने आपको देखें.... आई ऐम स्टेबल.... उनके बोल.... उनके व्यवहार.... मेरे मन पर प्रभाव नहीं डाल सकते....आई चूज माई रिसपांस....बिकॉज आई ऐम द पावरफुल बीइंग.....। (क्रमशः)

अमरावती। पुलिस आयुक्त अजीत पाटिल, ब्र.कु. उषा, श्रीमती

डॉ. मंदाकिनी एवं ब्र.कु. सीता आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए।



हरिद्वार। शिवध्वजारोहण करते हुए श्री हरिचैतनानंद गिरी महाराज, संस्कृत महाविद्यालय के कुलपति महावीर अग्रवाल, ब्र.कु. मीना तथा अन्य।



अहमदाबाद (सुख शांति भवन)। मेहता ब्रदर्स की समस्त स्टॉप को तनावमुक्त जीवन पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. जयश्री।



समराला (लुधियाना)। मुनिसिपल काउंसिलर अजीत गुप्ता को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राज तथा ब्र.कु. नीलम।



नरेला। व्यापार मंडल के अध्यक्ष कृष्ण कुमार बंसल का स्वागत करते हुए शक्ति एवं ब्र.कु. गीता।



सफीदो (हरियाणा)। एसडीएम उम्मेद सिंह मोहन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्नेह।

सत्य की खोज करना चिर-प्राचीनकाल से मनुष्य का एक पुरुषार्थ रहा है। कुछ लोग तो भौतिक जगत के कार्य-कलाओं, क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं और इसकी विविधताओं तथा इसमें की अनेक शक्तियों से सम्बन्ध सत्य सिद्धांतों की खोज में लगे रहे और अन्य कई इस परिवर्तनशील जगत के पीछे अथवा परे छिपे हुए सत्य को जानने के लिए साधना करते रहे। इसलिए संसार में दो प्रकार की विद्याओं का विकास हुआ। एक अपरा विद्या और दूसरी परा विद्या।

सत्य की परिभाषा - सत्य की चर्चा करने से पहले हमें सत्य की इस परिभाषा पर सहमत हो जाना चाहिए कि 'जो चीज जैसी है उसे वैसा ही जानना मानना और बतलाना तथा व्यवहार में लाना ही सत्य है।'

इस परिभाषा के साथ-साथ यहां हम यह बता देना आवश्यक समझते हैं कि जानने के साथ-साथ मानना भी जरूरी है क्योंकि यदि सत्य का ज्ञान होने पर भी हम उसे वैसा मानते नहीं हैं तो इससे विदित होता है कि हम उसके विषय में अभी भी हमारे मन में कुछ संशय, संदेह अथवा शंकाएं

इसलिए, हमारे मन में कमजोरी है या इसलिए ही हम डरते हैं कि लोग कहीं हमारी हंसी न उड़ाएं, हमें बेवकुफ न समझें या हमारा साथ न छोड़ दें। इसका तो यह अर्थ होता है कि हम उस सत्य के लाभ को और मूल्य को नहीं जानते और हम ऐसा भी महसूस नहीं करते कि यह तो लोगों को जरूर बताना चाहिए क्योंकि इसमें ही तो उनका भला है, बल्कि हम शायद ऐसा महसूस करते हैं कि यह बताने से लोग बुरा मान जाएंगे और हमें सत्य बताने में लोक-लाज महसूस होती है। यदि हम सत्य के मूल्य को, उसकी कल्याण करने की सामर्थ्य को तथा लोगों को उसे बताए जाने की आवश्यकता को नहीं जानते तब तो हम सत्य को भी यथार्थ रीति से या गहराई से नहीं जानते। सत्य तो संदेह - उच्छेदक, संशय - निवारक शंका-संहारक, संतोषकारक तथा शक्तिदायक होता है। उसके होते भय कहां ?

सत्य को जानने, मानने और बतलाने के अतिरिक्त सत्य को आचरण अथवा व्यवहार में लाना भी आवश्यक है वना किसी बात को जानने और मानने के बाद व्यवहार में न लाना तो बुद्धि

झूठ कोई तभी बोलता है जब वह चोरी करता है या अन्य कोई अपराध करने के कारण भयभीत होता है या किसी को धोखा देकर स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है, या बेईमानी पर उतर आता है, या किसी को पता दिए बिना उसे हानि पहुंचाना चाहता है और या वर्गला कर काम निकालना चाहता है। मनुष्य यह सब तभी करता है जब वह दूसरों का अहित करने पर तुला हो और यह व्यवहार वह उनके साथ करता है जिनसे उसे हानि पहुंचने की आशंका हो या जिनसे वह प्यार न करता हो। जिनको वह अपना मित्र समझता है, जिनसे किसी भी प्रकार का उसे भय न हो तथा जिनसे कल्याण होने का उसे पूरा विश्वास हो, उनसे तो वह कभी भी झूठ नहीं बोलता। इसका अर्थ यह हुआ कि झूठ के साथ भय, अपराध, बेगानापन या शत्रुता स्वार्थ-सिद्धि की भावना आदि कई दुर्गुण जुड़े हुए हैं। इन दुर्गुणों के अधीन आत्मा को शांति कहां ? ऐसे दुर्गुणों के कारण तो आत्मा का पतन ही हुआ है और होता चला जाता है। झूठ से तो अपने भी बेगाने बन जाते हैं, जिन्हें हम पर विश्वास हो वे कभी हमारे सत्य बोलने पर भी हम में अविश्वास करने लगते हैं और लोगों में हमारी प्रतिष्ठा या साख समाप्त हो जाती है। लोग झूठ वाले व्यक्ति का दोहरा चेहरा मक्कार मन तथा उसके चरित्र को संदिग्ध, व्यवहार को अविश्वसनीय और व्यापार को धोखाधड़ी या ठगी मानने लगते हैं।

इस प्रकार झूठ से न केवल मनुष्य 'दोगला' बन जाता है बल्कि वह समाज में कुरीति, शठ-नीति तथा दुराचार फैलाने का निमित्त बनता है। कलियुग लाने का निमित्त झूठ ही तो है। सबसे पहला झूठ तो स्वयं को 'आत्मा' मानने की बजाए 'शरीर' मानना है परंतु होते-होते झूठ पर झूठ सवार होकर झूठ का इतना बड़ा ढेर हो जाता है कि वह आसमान को जाकर छुता है और समुद्र की सतह तक जाकर पहुंचता है। कायाकला सब झूठ के परिणामस्वरूप चट हो जाती है। जब झूठ का बाजार गर्म होता है तो लोग झूठ को ही सत्य मानने लगते हैं और सत्य को झूठ समझते हैं क्योंकि झूठ को लोग सदा सजा और संवारकर बड़े जोरदार तर्क के साथ उसकी खूब पब्लिसिटी करके पेश करता है। वे यह तो भूल ही जाते हैं कि काठ की हांडी ज्यादा देर तक आग पर नहीं रह सकती और कागज के फूलों से सुगंध नहीं आती। फिर झूठ परिणाम भी झूठा ही होता है। झूठा व्यक्ति सुख के झूठे स्वप्न ही देखता रह जाता है, सच्चा सुख उसके हाथ नहीं आता। वह झूठ और धोखे से साधन इकट्ठा करने में ही जीवन लगा देता है और भय तथा चिंता की अग्नि में स्वयं को जलाता रहता है और फिर भी अपने झूठे मन से मानता है कि मैं सुख-मौज में हूँ। जैसे अंधे के मुंह पर लानत मारने से भी वह समझता है कि यह मुझसे प्यार कर रहा है वैसे ही झूठ से अंधी बुद्धि वाला व्यक्ति यह मान लेता है कि संसार के छह रसों के अतिरिक्त, सबसे अच्छा रस झूठ में है। वह पान को चबाने की तरह झूठ को अपने मुंह में डाले रखता है और झूठे सोने के जेवरों की तरह झूठ श्रृंगार किये रखता है। और कई तो खालिस झूठ का थोक व्यापार करते हैं, उनके व्यवहार में सत्य की रत्ती भी नहीं होती। वे झूठ के झांसे, दिलासे और पताशे देकर जीवन रूपी व्यापार चलाते हैं। अन्य कई सत्य-मिश्रित झूठ का प्रयोग करते हैं।

इसका परिणाम यह होता है कि ऐसा व्यक्ति -शेष पेज 8 पर



धुवनेश्वर। बीजू पटनायक एअरपोर्ट के डायरेक्टर शरद कुमार तथा उनकी परिवार के साथ ब.कु.लीना, ब.कु.विजय समूह चित्र में।



कुशमा (नेपाल)। नेपाल के पूर्व महाराज श्री ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम शाह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु.राधिका।



दिल्ली (कालकाजी)। 'प्रेम की शक्ति' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब.कु.शिवानी, ब.कु.प्रभा तथा अन्य।



नारनौल। हरियाणा के स्वास्थ्य मंत्री नरेन्द्र सिंह, चन्द्रप्रकाश जी, ब.कु.रामनाथ, ब.कु.रतना शिवध्वज लहराते हुए।



हालोल। नगरपालिका सदस्य नीतिन शाह, ब.कु.डॉ.निरंजना, भारत प्लास्टिक इण्डस्ट्रीज के चेयरमैन लक्ष्मण भाई गुरवाणी, ब.कु.सविता व ब.कु.नरेन्द्र।



खुसीपार (भिलाई)। दीप प्रज्ज्वित करते हुए विधायक भजन निरंकारी, स्कंद आश्रम के मणिसवामी जी, ब.कु.माधुरी एवं ब.कु.नेहा।



सत्य को जानने, मानने और बतलाने के अतिरिक्त सत्य को आचरण अथवा व्यवहार में लाना भी आवश्यक है।

हैं। अतः इन शंका-युक्त प्रश्नों के रहे होने के कारण सत्य के विषय में हमारा ज्ञान या विज्ञान निश्चयात्मक नहीं है। यदि ऐसा है तो फिर वह ज्ञान अथवा सत्य हमारे मन अथवा चरित्र को पूरी शक्ति अथवा पूरा बल प्रदान नहीं करेगा बल्कि हमारे मन में अथवा समाज में द्वंद्व पैदा करने वाला और अवस्था को डावांडोल बनाने वाला होगा। संशयमुक्त ज्ञान हमें कई बार किंकराव्यविमूढ़ स्थिति में भी ले जाता है और 'क्या करूं और क्या न करूं' तथा 'करूं या न करूं' तथा 'पता नहीं क्या होगा' - इस प्रकार के प्रश्न उत्पन्न करके मन में संघर्ष भी पैदा करता है और मन के मैदान में इन दो प्रश्नों की आपसी मुठभेड़ से संग्राम एवं संघर्ष ही उत्पन्न हुआ रहता है। इसलिए जानने के साथ मानना, पहचानना भी जरूरी है। यही कारण है कि लोग प्रायः सत्य कथन की जब शपथ लेते हैं तो कहते हैं कि - 'जहां तक मैं जानता और मानता हूँ' अथवा 'जहां तक मेरा 'ज्ञान और विश्वास' है, उसके अनुसार मेरा यह कथन है कि... इस प्रकार वे जानने के साथ-साथ मानने की बात भी व्यक्त करते हैं।

सत्य को जानने और मानने के अतिरिक्त सत्य बतलाना भी आवश्यक है वना यदि हम सत्य जानते और मानते तो है परंतु बतलाते नहीं है तो यह स्थिति इस बात की सुचक है कि अभी हमारे निश्चय या विश्वास में कमी है और

का विलास मात्र है, आडंबर है और सत्य के लाभ से स्वयं को वंचित करना है। जानकर और मानकर भी उस सत्य पर आचरण न करना तो जान बूझकर सत्य का विरोध करना तथा लोगों को सत्य के प्रति निश्चेष्ट या निरुत्साहित करना है। इस प्रकार सत्य की अवहेलना करना, उसका उल्लंघन करना और एक प्रकार से उसका विरोधी बनना - यह तो वैसे ही है जैसे कानून को जानने के बाद उसे कोई तोड़ता है। यह तो बड़ा अपराध है और इसके लिए तो बड़ा दंड है।

हां, हम आगे चलकर यह बताएंगे कि अपवाद के रूप में कभी-कभी ऐसी परिस्थिति भी आ जाती है कि जब सत्य को व्यवहार में नहीं लाया जा सकता परंतु उसे आचरण में लाया जा सकता है। ऐसी परिस्थिती भी आ जाती है कि जब सत्य को आचरण व व्यवहार में तत्काल अथवा तुरंत नहीं लाया जा सकता बल्कि लोक-कल्याणार्थ उसकी अभिव्यक्ति को स्थगित कर दिया जाता है और फिर भी उसे आचरण में लाया जाता है।

झूठ क्यों नहीं ? - पूर्व इसके कि हम इस विषय को आगे बढ़ाएं, हमें तनिक इस बात को भी स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि सत्य हमारे लिए कल्याणकारी और झूठ अकल्याणकारी कैसे है ?

पहले हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि

ध्यान से पाएं अंधकार मुक्त जीवन..

एक सूफी सदगुरु के पास युवक आता है और कहता है कि जीवन में खूब अंधकार का अनुभव होता है। कहाँ भी कोई दिशा सूझती नहीं। जहाँ भी लगा कि सुख मिलेगा, वहाँ मैं गया लेकिन अंततः दुःख का बढ़ावा ही हुआ है। कहीं से भी सत्य प्रकाश मिलता नहीं। बड़े-बड़े ग्रंथ पलट दिये, अनेक फकीरों के साथ चर्चा किया, खूब विचार किया, कहीं से कुछ भी नहीं मिलता। आपका नाम सुनकर आया हूँ। अंधकार से भरे जीवन में प्रकाश की किरण प्रवेश करे, ऐसा कुछ कीजिए।

सूफी फकीर कुछ बोला नहीं, शांति से बैठे रहे। युवक ओहोपाह होने लगा। सूर्यास्त हो गया, अंधेरा और गहरा होते जा रहा था। ऐसे में फकीर ने युवक से कहा उस कोने में एक दिया पड़ा हुआ है, उसे प्रगटाकर यहाँ ले आओ। बाहर का अंधकार दूर हो फिर हम अंदर के अंधकार को दूर करने की बात करेंगे। युवक ने बहुत सारी दियासलाई जलाई लेकिन दिया जल नहीं पाया। क्षण भर के लिए दिया जलता और कड़कड़ाहट के साथ फिर बुझ जाता और अंधकार मानो कि और गहरा होता जा रहा है ऐसा प्रतीत होता। युवक ने कहा कि ऐसा लगता है कि तेल में पानी मिल गया है और बाती भी पानी से गीली हुई पड़ी है। इसलिए जितनी बार जलाता हूँ उतनी बार फिर से बुझ जाती है और वातावरण धुआंमय होता जा रहा है।

सूफी संत ने कहा तो फिर तेल में से पानी निकाल दें, बाती को निचोड़ दें और उस दिए को प्रगटा दें। युवक ने उत्तर दिया कि ऐसा करने बैठ जाऊंगा तो पूरी रात बीत जाएगी और कोई बात भी नहीं हो पायेगी।

फकीर ने कहा, तो फिर छोड़ ये सब झंझट। यहाँ आकर शांति से बैठ जा। जीवन तेरा अंधकार से भरा है यह बात तो सच्ची है। परंतु तेरी अंतरात्मा में प्रकाश करना मेरे लिए भी इतना ही मुश्किल है क्योंकि तेल में पानी मिल गया है। बाती भी पानी से तरबतर है। ऐसी स्थिति में सारी माचिस की तीली को खत्म कर दू तो भी ज्योति नहीं जलेगी। थोड़ी देर कड़कड़ाहट होगी फिर से बूझ जायेगी। अंतःकरण जो विशुद्ध होगा तब सरलता से दीप प्रगटा सकते हैं। लेकिन अभी तो इसमें अंधकार, तृष्णा, इच्छा और असंतोष का पानी मिल गया है। पुस्तकों को पढ़-पढ़कर आपका दिमाग भर गया है। परमात्मा के बारे में तूने पढ़ा तो बहुत है लेकिन परमात्मा का अनुभव अभी तक नहीं हुआ। जो शास्त्र, ग्रंथ के सद्वचन तूने पढ़े हैं वे अवश्य ही कोई जागृत व्यक्ति के अंतर में से प्रगट हुए होंगे। ये चिंगारी का काम कर सकते हैं लेकिन तेल में जब तक पानी भरा होगा तब तक चिंगारी और दियासलाई क्या

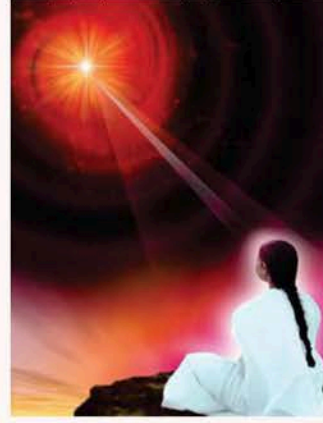
कर सकती हैं? उल्टा ही थोड़ा धुआं पैदा होगा और जिद लेकर वही काम करते रहेंगे तो घुटन बढ़ते जाएगी।

ज्ञान जब तक स्वानुभव न बने, सीधा अंदर से न आये तो कोई काम का नहीं। शास्त्र पढ़-पढ़कर गुब्बारों की तरह आपका अंधकार फुलता जा सकता है। आपको ऐसा लगता है कि कुछ जान लिया, लेकिन उससे अंधकार दूर नहीं होता। बाहर कितना भी भटकें, दूर-दूर नजर दौड़ाएं और दौड़ते रहें,

कुछ किया जाता है तब तक ध्यान हो नहीं सकता। ध्यान कोई क्रिया नहीं है लेकिन अंदर की शांत सजग अवस्था है। सतत जागते रहना, साक्षीभाव से अंदर जो कुछ दिखाई दे, अंतर में जो कुछ ओहोपाह चलता रहे उसे बिना विचलित हुए देखते रहें उसका नाम ही ध्यान है।

आरंभ में अंदर प्रवेश करेंगे तो भयानक अंधकार होगा। घड़ी-घड़ी में ध्यान का

जीवन में सजगता, ध्यान या जागृति बढ़े ऐसी चाहना रखते हो तो सतत खतरे में जीने को पसंद करो। सुरक्षित जीवन, वही के वही पारिपाटी और मूर्च्छा में चलती रहती यांत्रिक क्रियाओं को छोड़ें। नये-नये साहस, नया-नया सीखने की लगन, नये ढंग से जीने की इच्छा, जीवन में सजगता बढ़ाती है।



आखिर तो वह मृगतृष्णा समान जल ही सिद्ध होता है। बाहर के जगत में हो सकता है दौड़ते रहने आगे कहीं जल मिल भी जाये लेकिन अंदर से तृप्त होना है तो बाहर का जल कभी भी संतोष नहीं कर सकता। उसके लिए एकांत में शांत होकर अंदर ही अंदर उतरते रहना होगा। सच्चा प्रकाश, सच्चा जल तो अपने स्वयं की अंतरगुफा में ही होता है।

अंदर के अंधकार को दूर करने का एकमात्र उपाय है मेडिटेशन (ध्यान)। जैसे बाहर के अंधकार को लाठी लेकर दूर नहीं कर सकते, उसके लिए एक छोटी सी ज्योति ही पर्याप्त होती है। ऐसे ही अंदर के अंधकार को दूर करने के लिए आश्रमों में जाकर गुरु के चरण में आशीर्वाद मांगने से न तो अज्ञान दूर होगा और न ही जीवन प्रकाशित होगा। उसके लिए तो ध्यान का दीपक लेकर अपने स्वयं की अंतः गुफा में जाना पड़ेगा। अंदर के अंधकार को दूर करने के लिए उसके सिवाय दूसरा कोई उपाय नहीं है। जब तक

दीपक बुझ गया हो ऐसा लगेगा। सजगता बारम्बार गुम हो गई हो ऐसा अनुभव होगा और फिर-फिर से विचारों के घुमस में अटक जाएंगे। लेकिन तुरंत ही सचेत हो गये तो ज्योति फिर से प्रगट हो जाएगी। पक्षपात रहित जागृति के सिवाए अंधकार को दूर कर सकेंगे और सब रूकावटें खत्म हो जाएगी। अंधकार के कारण ही हमें भय लगता है। दूसरे के प्रति विश्वास पैदा नहीं होता। चारों ओर से कोई न कोई हमला करने को तैयार रहते हैं। 'दूसरा' या 'पराया' कह सके ऐसा कोई वहाँ होता नहीं।

ज्ञान ध्यान का दीपक जलता रहे तो उसके प्रकाश में जो जैसा है वैसा ही दिखाई देगा। बहुत सारी भ्रांति अपने आप दूर हो जायेगी। और एक अजब प्रकार की शांति, ऐसी अपूर्व खुशी और सुंदर जीवनशैली निर्मित होगी। ज्ञान-ध्यान सिवाए जीवन में से दुःख और अंधकार दूर करने के लिए कोई उपाय नहीं है।



फिलीपंस। ब्र.कु.शिवानी एवं सुरेश ओबराय का ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर स्वागत करते हुए ब्र.कु.बिन्दु तथा ब्रह्माकुमार भाई-बहनें।



दिल्ली (शक्तिनगर)। 'भारत का स्वर्णिम भविष्य' महोत्सव में महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष ममता शर्मा, ब्र.कु.चक्रधारी, ब्र.कु.आशा, पंजाब केसरी की निदेशिका किरण चोपड़ा, महापौर उत्तरी दिल्ली मीरा अग्रवाल तथा अन्य।



पाटन (छ.ग.)। शिवरात्री के महापर्व पर न्यायधीस चन्द्रकर जी को ईश्वरीय सौगत देते हुए ब्र.कु.शिवकुमारी एवं अन्य



नरसिंहपुर। रोटरी क्लब द्वारा आयोजित हेल्थ कार्यक्रम में द्विप उद्घोषन देने के पस्वात ब्र.कु.कुसुम बहन को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए रोटरी क्लब के प्रेसिडेंट आर.के.काबरा



प्रेम नगर। मंजुषा जोहारी, सरिता मंगवानी, गीता मारकम, ब्र.कु. शशि, सोमा भीसे, रुपाली इन्द्रा दुबे, अनुपमा निनामा एवं ब्र.कु. सुमित्रा।



राजनांदगाँव। महिला दिवस पर भाजपा महिला मॉंचा द्वारा ब्र.कु.पुष्पा का सम्मान करते हुए जिलाध्यक्ष पूर्णिमा साहु, सांसद मधुसुदन यादव एवं अन्य



साराला कला। महाराष्ट्रराज्य पर आयोजित कार्यक्रम में शिवधर लहराते हुए गिकिता अधिकारी शिवमोगा, जल अधिकारी तिवारी, सरपंच शिव शंकर नागर एवं ब्र.कु. मोना दीदी

निर्विघ्न जीवन



मानव जीवन सभी प्राणियों में श्रेष्ठ जीवन है। उनमें भी सर्वश्रेष्ठ वे हैं जिनका जीवन सरल, सुख-शांति व प्रेम से युक्त तथा निर्विघ्न है। हम कलियुग की गहन रात्रि में रह रहे हैं, यहां ठोकरें लगना भी सम्भव है और अनेक अनचाहे विघ्न भी रास्ता रोक सकते हैं। परन्तु ईश्वरीय ज्ञान के बल से सहज ही विघ्नों को पार करना सीखना है। स्वयं को इतना सरलचित्त व शक्तिशाली बनाना है जो हर बात विघ्न प्रतीत न हो।

कभी विघ्न मनुष्यों की ओर से आते हैं तो कभी सरकार की ओर से। कभी व्याधियां विघ्न रूप बन जाती हैं तो कभी धन का अभाव। कभी असफलता विघ्न खड़े कर देती है तो कभी अपने ही संस्कार। परन्तु बीज रूप में यों कहें कि मनुष्य के अपने पूर्व के संचित विकर्म ही विघ्नों के ज्यादा जिम्मेदार हैं।

भगवानुवाच याद रखें - जो आत्माएँ मास्टर सर्वशक्तिवान के नशे में रहती हैं, विघ्न-समस्याएँ उनके पास आ नहीं सकती। वास्तव में जब हम साधारण संकल्पों में रहते हैं तो हम समस्याओं का निर्माण करते हैं। भगवानुवाच है कि समस्याएँ और कुछ भी नहीं कमजोर मन की रचना है। उदाहरण लें एक व्यक्ति दूसरे को अपशब्द कह रहा है परन्तु दूसरा भी मुस्करा कर आगे बढ़ जाता है, बात वहीं खत्म हो जाती है, परन्तु यदि उसे भी क्रोध आ जाए और झगड़ा हो जाए तो समस्या विकराल रूप ले लेती है।

मास्टर सर्वशक्तिवान के स्वमान में रहने से हमारी शक्तियां जागृत रहती हैं और हमसे चारों ओर शक्तियों की किरणें फैलती रहती हैं जो विघ्न को नष्ट कर देती हैं। इसलिए उठते ही 21 बार याद करना चाहिए कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और विघ्न विनाशक हूँ। इससे जीवन से अनेक समस्याएँ नष्ट होती रहेगी। और साथ में यह भी स्वमान या वरदान याद कर लें कि सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है तो सफलता के द्वार खुल जायेंगे।

निर्विघ्न जीवन जीने के कुछ सूत्र हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। कभी भी दूसरों के जीवन में विघ्न न डालें। प्रायः विघ्न डालने वाले को इसका एहसास नहीं होता। वह अपने व्यवहार को कॉमन व आवश्यक मानता है। परन्तु कटु वचन बोलकर, अपमान करके, तन्त्र-मंत्र के द्वारा दूसरों को हानि पहुंचाकर, व्यर्थ में बदनाम करके, झूठे आरोप लगाकर, सदा विरोध करके व झूठे केस करके दूसरों के जीवन में विघ्न डालना -यह यद्यपि कलियुग की पहचान है, परन्तु हमें ये सब नहीं करना है। याद रखें - जो व्यवहार हम दूसरों से करते हैं वही व्यवहार हमें अवश्य ही प्राप्त होता है - यह सृष्टि का अविनाशी सिद्धांत है। किसी भी तरह यदि हम दूसरों के जीवन में अशान्ति पैदा करते हैं या अन्य कोई विघ्न डालते हैं तो कोई न कोई हमसे भी वैसा ही करेगा। हम सब

भगवान के बच्चे हैं। भगवान अपने सभी वत्सों को समान रूप से प्यार करता है। यदि हम उसके बच्चों को परेशान करेंगे तो हम उसके प्यार से वंचित रह जाएंगे। किसी की भी बनी को न बिगाड़ो अन्यथा तुम्हारी बनी भी बिगड़ जाएगी। कई लोग ईर्ष्या वश या बदले की भावना वश दूसरों के निर्मल जीवन में विघ्न डालते हैं। वे तन्त्र-मन्त्र का भी प्रयोग कराते हैं

भगवानुवाच याद रखें - जो आत्माएँ मास्टर सर्वशक्तिवान के नशे में रहती हैं, विघ्न-समस्याएँ उनके पास आ नहीं सकती। वास्तव में जब हम साधारण संकल्पों में रहते हैं तो हम समस्याओं का निर्माण करते हैं। भगवानुवाच है कि समस्याएँ और कुछ भी नहीं कमजोर मन की रचना है।

परन्तु ऐसा करने वालों को यह नहीं भूलना चाहिये कि ऐसा ही कोई तुम्हारे साथ भी करेगा।

याद रहे पवित्रता हमारा सुरक्षा कवच है। इस बल को बढ़ाते चलें तो जीवन निर्विघ्न रहेगा। पवित्रता अपनाकर पुनः छोड़ देना, क्रोध, लोभ व अहंकार के वश रहना या पुनः व्यसनों के वश हो जाना अर्थात् अपने सुरक्षा कवच को स्वयं छिन्न भिन्न कर लेना है और इसका अर्थ है विघ्नों का आह्वान करना।

कर्म बन्धनों के कारण भी अनेक विघ्न आते हैं। परन्तु इन विघ्नों में यदि स्थिति न बिगड़े तो विघ्न सहज ही टल जायेगा। माँ-बाप को युवा बच्चों की ओर से भी विघ्नों का सामना करना पड़ता है। कहीं बच्चे उन्हें मारने लगते हैं तो कहीं वे बुरे संग में फंसकर उनके नाक में दम कर देते हैं। इस समस्या को भी प्यार से, शुभ-भावनाओं से व स्वमान की स्थिति द्वारा दूर करना चाहिए।

स्वयं जितने सरल होंगे, विघ्न भी उतने ही सरल हो जाएंगे। इसलिए अपनी नेचर को सरल बनायें। अर्थात् सदा हल्के रहें। कुछ

बातों को स्वीकार करके चलें। तथा बड़ी बातों को छोटा करना अपना स्वभाव बनायें। साथ ही साथ रोज जो भी बातें आयें, उन्हें जल्दी खत्म करके आगे बढ़ें।

जो स्वयं अड़ियल होकर रहते हैं, बातें भी उनके मार्ग में अड़ जाती हैं। जिद्दी नेचर का त्याग करें, दृढ़ संकल्प धारण करें। दोनों एक ही नहीं हैं। जिद्द एक बुराई है और दृढ़ता महानता है। मन को दृढ़ करें, बातों को पकड़कर न बैठें। भगवानुवाच ... तुम बाप की याद में मग्न रहो तो तुम्हारे लिए सोचने का काम भी बाप करेगा। जहाँ

भी किसी के जीवन में विघ्न अधिक होते हैं तो देखने में यही आता है कि वे योग-अभ्यास पर ध्यान नहीं देते। व्यर्थ व बाह्यमुखता में सदा रहते हैं। अथवा उनमें कहीं न कहीं अपवित्रता रहती है या पुण्य कर्म का अभाव रहता है। कईयों के विघ्न भरे जीवन में जब उन्हें राय दी कि सब कुछ एक तरफ रखकर, हल्के होकर या मन के बोझ शिव बाबा पर अर्पित करके चार घण्टे योगाभ्यास, स्वमान व ज्ञान-अध्ययन में तीन मास तक रहें और जब उन्होंने ऐसा किया जो जीवन निष्कंटक हो गया।

सत्य तो यही है कि ईश्वरीय शक्ति के आगे विघ्न ठहर नहीं सकते। कई लोगों के उलझे हुए कोर्ट केस स्वमान व योग बल से जल्दी ही ठीक हो गये। कईयों को स्टडी में मिलने वाली असफलता स्वमान से सफलता में बदल गई। योग-युक्त रहने से लम्बे समय से चली आ रही शत्रुता समाप्त हो गई। लम्बे समय की बीमारियां भी टिक नहीं पाई इस आध्यात्मिक उपचार के समक्ष। बस योग की शक्ति को बढ़ावें। कम से कम चार घण्टे स्वयं को अवश्य दें। समस्या तो बड़ी यही है कि मनुष्य समस्याओं में तो बहुत समय देता है, परन्तु वह स्वयं की स्थिति को महान बनाने में समय नहीं देता।

पहचानें अपनी योग की शक्ति को। भगवानुवाच याद करें - तुम्हारे पास शक्ति है हर संकल्प को पूर्ण करने की। बस संकल्प शक्ति को बढ़ावें।

तो आइये अपनी योग-शक्ति के द्वारा सर्व विघ्नों को नष्ट करके निर्विघ्न जीवन का सुख लें। विघ्न चाहे कैसा भी हो, आया है तो जायेगा अवश्य। यह न भूलें कि विघ्न आया विघ्न विनाशक के पास, भस्म होने के लिए। प्रतिदिन सबेरे उठकर पांच-पांच बार इन स्मृतियों का तिलक लगाया करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं विघ्नों से अधिक शक्तिशाली हूँ, मैं विजयी रहूँ, मैं विघ्न विनाशक हूँ और सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। ऐसा करने से आपके वाइब्रेशन्स बहुत पावरफुल हो जाएंगे और आप विघ्नमुक्त हो जाएंगे।



इन्दौर (ओम शान्ति भवन)। वरिष्ठ पत्रकार ब्र.कु.कमल दीक्षित जो को 'लाइफ टाइम अचीवमेंट जर्नलिज्म अवार्ड' देकर सम्मानित करते हुए म.प्र.के गृहमंत्री उमाशंकर गुप्ता



च्वाईस पैलेस कॉलोनी। शिवरात्री पर ध्वजारोहण करते हुए रिटायर्ड डी.एस.पी.भ्राता नरवले, अनीता जोशी, ब्र.कु.रक्षा एवं ब्र.कु.अर्चना



कालाखेत। ब्रह्माकुमारी गीतापाठशाला के उदघाटन पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात समाज सेवी अत्मन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मधु बहन



डौंडी लोहारा। शोभायात्रा का उदघाटन करते हुए ब्र.कु.सीमा, पिछड़ा वर्ग आयोग सदस्य देवेन्द्र जायसवाल, राजेन्द्र पारख, मंडल अध्यक्ष दीपचंद भंसाली, फारेस्ट अधिकारी मूलचंद शर्मा जी एवं ब्र.कु.चन्द्रलता



केलोट (इन्दौर)। शोभायात्रा का शुभारंभ करते हुए मध्य प्रदेश कस्तुरबा ट्रस्ट के सदस्य गुलाबसिंह मस्करा, ब्र.कु.कुसुम, ब्र.कु.पिंकी, ब्र.कु.लीलाधर एवं अन्य



सेमरा बाजार। अशोक यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.पूनम

सत्य ...

या तो उसके मन में झूठ और सत्य का परस्पर संग्राम चलता है और उन दोनों सिंहों की दहाड़ से वह परेशान रहता है और या सत्य का बल क्षीण हो जाने से झूठ ही उस पर सवार होकर उसे चित्त किये रहता है। इस प्रकार उसके मन में चैन नहीं होता। जैसे कचड़े के ढेर पर मक्खी-मच्छर, चूहे-चमगादड़ या जाला-झांकर आते हैं, वैसे ही उसके मन में भी निकम्मे विचार और बेकार ख्याल आते रहते हैं। इससे उसका दोहरा चरित्र तो होता है परंतु द्वैत के कारण, अनेक मुखौटों के कारण तथा अन्तर्मन में सत्य-असत्य की मुठभेड़ के कारण वह परेशान ही बना रहता है। अतः ऐसे व्यक्ति के मन में सच्ची शांति भी नहीं हो सकती बल्कि झूठी ही शांति होती है।

हमने पहले भी कहा है कि जहां प्रेम और मैत्री का अभाव हो, वहीं व्यक्ति झूठ बोलता है। परंतु प्रेम और मैत्री तो शांति के जनक और जननी है। अतः झूठे के मन में शांति की हत्या हो जाती है अथवा मित्रता का घात हो जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि सत्य ही उजाला अथवा प्रकाश है। सत्य का मार्ग ही शांति और प्रेम का मार्ग है। सत्य ही मनुष्यात्मा को भय और दुर्गुणों से छुड़ाने वाला होने से कल्याणकारी भी है। झूठ तो मनुष्यात्मा का शत्रु और पाप का प्रेरक है।

नीति-निपुण और युक्तियुक्त - हम पहले कह आये हैं कि कई परिस्थितियां अपवाद रूप में ऐसी भी होती हैं कि उनमें सत्य को कुछ क्षण के लिए मौन धारण करना पड़ता है अथवा नीति से जुड़ना पड़ता है। उन परिस्थितियों में यदि सीधे शब्दों में अथवा तत्काल ही सत्य कह दिया जाए तो वह किसी के लिए कठिनाई या हानि भी ला सकता है। उदाहरण के तौर पर कभी-कभी डॉक्टर के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वह रोगी की मानसिक दुर्बलता को सामने रखते हुए उसे तुरंत ही यह सत्य न बताए कि वह रोगी शीघ्र ही मृत्यु का शिकार होने वाला है। इसी प्रकार, हमें देखना यह होता है कि सत्य का उद्देश्य तो कल्याण करना ही है। अतः यदि इस उद्देश्य की पूर्ति सत्य को तुरंत प्रकाशित करने से नहीं होती तो सत्य को सरलतापूर्वक बाद में बताने के लिए फिलहाल स्थिति भी करना पड़ता है। अन्यथा, हमने यह जो कहा है कि कई बार सत्य को मान्यता देने पर भी उसे व्यवहार में नहीं लिया जा सकता, उसका एक उदाहरण पृथ्वी के आकार से सम्बंधित है। वह यह है कि पृथ्वी तो गोल है परंतु जब हम किसी मकान का नक्शा बनाते हैं या उसका निर्माण करते हैं तब हम पृथ्वी को गोल मानकर भवन-निर्माण नहीं करते बल्कि चपटा मानकर ही करते हैं। ऐसे ही जीवन में कई ऐसे अवसर आते हैं जब कल्याण को सामने रखते हुए अल्पकाल के लिए सत्य-कथन को स्थगित करना पड़ता है।

इसी प्रकार, कभी ऐसा भी होता है कि सत्य को सीधे शब्दों में बताने से परिस्थिति बिगड़ भी सकती है, झगड़ा बढ़ भी सकता है, अकल्याण होने की दशा भी पैदा हो सकती है। ऐसी हालत में सत्य को गोल-मटोल शब्दों में भी बताना पड़ता है जिससे सत्य कह भी दिया जाये और बात भी न बिगड़े। यह नीति है अथवा युक्ति है। परंतु इस नीति का प्रयोग किसी के अकल्याण के लिए नहीं बल्कि कल्याण ही के लिए किया जाता है। और इसका अभिप्राय झूठ बोलना या इसका अर्थ डरना नहीं बल्कि सफलतापूर्वक सत्य कहना या कल्याण करना ही होता है।

लेख के कलेवर की सीमा को सामने रखते हुए यहां हम एक-दो बातें और कहकर समाप्त करेंगे। एक तो यह कि सभी बातों के सत्य को जानना सदा कल्याणकारी नहीं होता। कई बातों को न पुछना, उनकी गहराई में न जाना या उनके सत्य के पीछे न पड़ना ही बुद्धिमानी है। इसलिए ही कहा गया है कि जहां अनभिज्ञ रहना ही अधिक आनंदकर हो, वहां जानकारी प्राप्त करना गलती है। किन्हीं बातों के सत्य की जानकारी हानिकर होती है। हम सिगरेट पीकर ही उससे होने वाली हानियों को जानें और पता करें कि सत्य क्या है - यह तरीका गलत है। इसी प्रकार, आणविक अखों-शखों का निर्माण कैसे होता है, हम इनके सत्य को खोजने लगे - यह भी गलत है क्योंकि इसकी हमें आवश्यकता ही क्या है? परंतु कुछ बातें ऐसी हैं कि उनके बारे में सत्य को न जानना बहुत हानिकर है। उदाहरण के तौर पर अपने स्वरूप के विषय में तथा कर्म-अकर्म-विकर्म की गति के बारे में सत्य-ज्ञान प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है। यदि हम इन सत्यों को जाने बिना कोई विकर्म करते हैं तो हम यह तर्क नहीं दे सकते कि हमें इस नियम का पता ही नहीं था।

संगठन में शक्ति होती है

जीवन में हम भी अगर परिवार में एक होकर के रहते हैं। तो पारिवारिक समस्याओं का कई तरह से समाधान कर सकते हैं। हमें जीवन जीने के लिए भी आसानी हो जाती है। इकट्ठे होते हैं तो उस संगठन को तोड़ने की क्षमता किसी की भी नहीं होती है। इस तरह से जब ये बात उन बच्चों को समझ में आ गयी, तब से उन्होंने निश्चय कर लिया कि आज के बाद हम कभी भी जीवन में लड़ेंगे नहीं। एक-दूसरे से अलग नहीं होंगे। एक होकर के हम चलेंगे। तो ये जीवन जीने की कला है कि जब हम अपने मन, वचन, कर्म को एक कर देंगे, तो जीवन में जो शक्ति आयेगी, उस शक्ति के आधार से कोई हमें तोड़ नहीं सकता है। हम जीवन में कभी दिलशिकस्त नहीं होंगे। हम जीवन में कभी भी उदासी में आकर के नहीं टूटेंगे। हर रीति से हम अपने आपको सशक्त बनाकर के चलते चलेंगे। जीवन जीना आसान हो जायेगा। अगर ये तीनों शक्ति अलग-अलग दिशा में चली गई, तो इन शक्तियों को तोड़ना, इन शक्तियों को भ्रमित करना, आसान होगा, कोई हमारे मन को भ्रमित कर देगा। कोई हमारी वाणी को भ्रमित कर देगा और कोई हमारे कर्म को भ्रमित कर देगा। इस प्रकार जीवन में दिलशिकस्तपना, जीवन से हारने का अनुभव होगा और हम टूटने लगे। ये जीवन को तोड़ने की विधि है। यही आज संसार में हो गया है कि मनुष्य किस प्रकार छोटे-छोटे बच्चों को भी भ्रमित करते हैं। जवानों को भ्रमित करते हैं। पद से हटा देते हैं। इसलिए गीता में हमें भगवान ने यही सीख दी "ओम ततसत्" यानि मन, वचन, कर्म को एक करते हुए ये समस्त तत्व के अंदर सत्य भाव, श्रेष्ठ भाव और दृढ़ता को ले आये, तो जीवन में कोई उसको तोड़ नहीं सकेगा। तो इस तरह से हमारा जीवन है और जीवन जीने की कला है।

अब हम थोड़ी देर के लिए मेडिटेशन करेंगे और अपने मन को परमात्मा में एकाग्र करेंगे। जिस प्रकार मेडिटेशन की विधि हमने गीता के पांचवे और छठवें अध्याय से आरंभ की। जहां परमात्मा ने हमें बताया कि किस प्रकार अपने मन को स्थित करना है। आत्म-भाव या आत्म-स्थिति में जब मन को स्थित कर लेते हैं तो परमात्मा की याद सहज स्वाभाविक आती है। सामने वो दिव्य स्वरूप है, परमात्मा

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक बहस्य

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा



परम प्रकाश, तेजोमय परंतु जैसे कहा चंद्रमा के समान शीतल प्रकाश से सम्पन्न है। जो असीम प्यार की वर्षा करते हैं। हम अपने मन के अंदर अंतरचक्षु से उस दिव्य स्वरूप को निहारते जायें। उसका अनुभव करते जायें। तो जैसे मैं विचार देती जाती हूँ, आप अपने मन को भी उस अनुसार यात्रा पर ले चलेंगे।

अपने मन और बुद्धि को....समस्त बाह्य बातों से....समेत लेते हैं.....और अपने अंतरचक्षु से..... भ्रुकुटी के मध्य में..... स्वयं को देखें दिव्यपुंज ज्योतिस्वरूप मेंमैं आत्मा अजर, अमर, अविनाशी हूँ..... चैतन्य शक्ति हूँ धीरे-धीरे..... अपने मन और बुद्धि को ले चलते हैं.....परमात्मा के सानिध्य में.....देह और देह के संबंधों सेअपने मन और बुद्धि को न्यारा करते हुए.....पंच तत्व की दुनिया से.....दूर.....अनंत शांतिधाम में.....दिव्य प्रकाश से भरपूर उस दिव्य लोक में.....अन्तरचक्षु से स्वयं को देखती हूँ.....प्रकाश पुंज के रूप में.....उस दिव्य लोक में.....मैं आत्मा...अपने संपूर्ण....सतोगुणी स्वरूप में स्थित हूँ.....सतोगुण का प्रवाह..... चारों ओर प्रवाहित हो रहा है.....ये सतोगुण.....जैसे इंद्र धनुष के सप्त रंगों की तरह है..... जो मुझ आत्मा में..... दिव्य तेज का अनुभव करा रहे है..... ये सतोगुण का प्रभामंडल दिव्य और अलौकिक है..... मैं स्वयं को अपने पिता परमात्मा के.....सानिध्य में देखती हूँ.....मेरे पिता परमात्मा.....दिव्य तेजोमय.....सूर्य के समान प्रकाशमान हैं.....असीम प्रेम के सागर हैं..... ज्ञान के सागर हैं.....ज्ञान की रोशनी से मेरे मन के अंधकार को दूर करते जा रहे हैं.....कितनी सौभाग्यशाली आत्मा हूँ मैं..... जो परमात्मा के असीम प्यार की पात्र आत्मा बन गयी.....पिता परमात्मा.....वरदानों से मुझ आत्मा को वरदानी आत्मा बना दिया.....असीम शक्तियों की किरणें..... मुझ आत्मा को.... सशक्त बनाती जा रही है.....मैं आत्मा..... स्वयं को धन्य-धन्य अनुभव कर रही हूँ.....मैं आत्मा.....सर्व प्राणियों सेस्वयं को भरपूर करती जा रही हूँ.....परमात्मा के इस दिव्य प्यार में..... स्नेह के सागर में....समाती जा रही हूँ.....प्रभु प्रेम की किरणों को.... स्वयं में समातेमैं अपने मन और बुद्धि को वापिस इस पंच तत्व की दुनिया की ओर....शरीर में भ्रुकुटी के मध्य में..... स्थित करती हूँ.....और प्रेम के प्रवाह को हर कर्म में प्रवाहित कर रही हूँ। (कमशः)



सेलू (परभणी)। श्रीश्री रविशंकर को आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सविता।



मुन्द्रा-कच्छ। आध्यात्मिक कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.मीरा। मंचासीन हैं ब्र.कु.कमलेश, ब्र.कु.सुशीला व कपिल केसरिया।



लातूर। प्रकृति, पर्यावरण एवं आपदा प्रबंधन अभियान का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.मोहन सिंघल, महापौर सुरेश पवार, राजेश्वर बुके, ब्र.कु.प्रेम तथा अन्य।



भीमवरम। पूर्व मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडु को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.रेवती एवं ब्र.कु.विशाला।



मोहाली। सर्वधर्म सम्मेलन में फादर सेबास्टियन बास्को, इमाम जनाब जुबीर अहमद, एचएस मान, हरीश मोंगा, ब्र.कु.प्रेमलता, ब्र.कु.रमा तथा अन्य।



अमेठी। उत्तरप्रदेश के सिचाई मंत्री गायत्री प्रजापति को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुमित्रा तथा ब्र.कु.सुभामा।

कथा सरिता

वशीकरण मंत्र

एक शिष्य अपने गुरु के पास जाकर विनीत भाव से बोला - गुरुदेव! आप मुझे कोई ऐसा मंत्र दें ताकि देवता मेरे वश में हो जाएं।

गुरु ने कहा -जरूर दे दूंगा, पर पहले यह बताओ कि क्या तुम्हारे घर के नौकर-चाकर तुम्हारे वश में हैं? वह बोला -वे तो सब कामचोर हैं। काम न करने का बहाना ढूंढते रहते हैं। 'क्या परिवार वाले तुम्हारे वश में हैं?' 'नहीं, सब स्वार्थी हैं।' 'तुम्हारी पत्नी तो तुम्हारे वश में है?' 'कहां है गुरुदेव! मैंने अपनी पत्नी से कहा एक हफ्ते बाद पीहर चली जाना। मगर मेरे मना करने पर भी कल अपनी मां से मिलने चली गई - शिष्य ने

जवाब दिया।' फिर गुरु ने पूछा, चलो सबको जाने दो। मुझे यह बताओ कि तुम्हारा अपना मन तो तुम्हारे वश में होगा ही।

शिष्य ने कहा, नहीं गुरुदेव! मन वश में कहां है! यह तो बड़ा चंचल है। एक स्थान पर स्थिर होता ही नहीं है।

गुरु ने कहा -अरे भाई! जब परिवार, नौकर, पत्नी तेरे वश में नहीं, यहां तक कि तेरा मन भी तेरे वश में नहीं है तो देवता तुम्हारे वश में कैसे होंगे? सबसे पहले तुम अपने मन को वश में करो। मन जिसके वश में हो जाता है, देवता भी उसको नमन करते हैं।

एक राजा एक फकीर का भक्त था। एक दिन फकीर से राजा ने कहा -बाबा, जो चीजें हमारे पास हैं, वे आपके पास भी हैं।

फिर आपके और हमारी जिंदगी में क्या फर्क है? आप भोजन करते हैं, हम भी करते हैं। आप कपड़े पहनते हैं, हम भी पहनते हैं। हमारे पास धन-दौलत है, आपकी भी हर ज़रूरत दूसरों की दान-दक्षिणा और भिक्षा से पूरी हो ही जाती है। फकीर ने जवाब दिया- फिर भी हमारे और तुम्हारे बीच में गहरा फर्क है। वक्त आने पर बताऊंगा।

एक दिन राजा फकीर के साथ बैठा था। फकीर ने राजा का हाथ देखा और गमगीन हो गया। राजा ने इसका मतलब पूछा। फकीर ने कहा -कल सूरज उगने से पहले तुम्हारी मौत हो जाएगी। यह सुनते ही राजा घबरा गया। राजा ने कहा -ऐसा कैसे हो सकता है? फकीर ने कहा -तुम्हारे हाथ की रेखाएं यही बात बोल रही हैं। राजा उदास होकर महल में लौट आया। उसने अपने मंत्रियों, राजकुमारों और मंत्रियों को बुलाकर कहा -सभी माला लेकर राम का नाम जपो। मेरी मौत कल सुबह हो जायेगी। हो सकता है कि भगवान का नाम लेने से मेरी मौत टल जाए।

एक गांव में एक संत के पास एक जिज्ञासु आया। उसने संत से कहा -गुरुदेव, मैं आपके पास ज्ञान पाने आया हूँ, मुझे ज्ञान-दान दें। संत ने कहा -मैं

इंसानों को ही ज्ञान देता हूँ। पहले इंसान बनकर आओ। इंसान बनने के लिए कड़ी तपस्या करनी पड़ती है। वह जिज्ञासु संत को प्रणाम करके जंगल में तपस्या करने लिए चला गया। छह महीने तपस्या के बाद वह संत के पास लौटा। संत ने अपनी कुटिया के बाहर एक महिला को खड़ा कर दिया और कहा -जैसे ही वह आदमी आए उस समय झाड़ू लगाते हुए आसपास की धूल उड़ा देना। महिला ने वैसा ही किया। अपने साफ-सुथरे कपड़ों पर धूल गिरने से उसे बहुत गुस्सा आया और महिला के साथ गाली-गलौच करने लगा। संत यह सब देख रहे थे। जिज्ञासु ने संत के पास जाकर कहा -गुरुदेव! मैंने गहन वन में भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी पर विजय प्राप्त करने की कठिन साधना की, अब मुझे ज्ञान-दान दें। संत ने फिर कहा -नहीं अभी तुम पात्र बनकर आओ। संत की बात सुनकर जिज्ञासु दुबारा साधना करने जंगल

एक राजा के सात राजकुमार थे। वे सातों राजकुमार एक संत का प्रवचन सुनने गए। वे उनकी वाणी से बहुत प्रभावित हुए और उन्हें वैराग्य आ गया।

उन्होंने तय किया कि वे भी सन्यास लेकर ज्ञान प्राप्त करेंगे। उन्होंने संत से निवेदन किया -हम भी साधु बनना चाहते हैं। संत ने कहा -अगर तुम्हारे मन में सचमुच संसार से मोह छूट गया है तो मैं तुम्हें दीक्षा देने के लिए तैयार हूँ। राजकुमारों ने सोचा कि अगर माता-पिता के पास सन्यास की आज्ञा लेने जाएंगे तो शायद वे इसके लिए तैयार नहीं हों इसलिए अपने सेवक द्वारा यह सूचना भेजवा देंगे। उस सेवक ने राजकुमारों की बहुत सेवा की थी इसलिए उन्होंने अपने वस्त्र-आभूषण सेवक को दे दिए। सेवक इतने सारे आभूषण पाकर बहुत खुश हुआ। राजकुमारों ने सेवक से कहा -तुम महाराज को सूचना देना कि आपके सातों पुत्र सन्यासी हो गए हैं और उन्होंने आपसे क्षमा मांगी है कि बिना अनुमति लिए सन्यास लिया है। सेवक यह संदेश लेकर नगर की ओर चल दिया। चलते-चलते सेवक थक गया। वह रास्ते में एक पेड़ के नीचे आराम करने बैठ गया। तभी उसे विचार आया कि अगर मैं राजा को सातों राजकुमारों के सन्यास की खबर सुनाऊंगा, तो राजा शायद विश्वास न करे और मेरे पास उनके वस्त्र-आभूषणों को देखकर सोचने लगे कि कहीं मैंने ही गहनों

राजा और फकीर

पूरी रात महल में मातम छाया रहा। सभी भगवान का नाम जपते रहे। धीरे-धीरे रात कटी और सुबह हुई।

राजा, उसका परिवार और सभी दरबारी खुशी से झूम उठे। राजा अपने परिवार के साथ फकीर के दर्शन करने पहुंचा। राजा ने कहा -बाबा, मेरी जिन्दगी बच गई। फकीर ने कहा -जिंदगी तो बचनी ही थी। राजा ने कहा -आपने तो सुबह तक मेरी मौत की भविष्यवाणी की थी। फकीर ने कहा -रात भर तुम्हारी आंखों के सामने मौत ही नाच रही थी। पूरी रात तुम बैचेन रहे। तुम्हारे पास सब सुख-सुविधाएं थीं, पर तुम घबराते रहे। राजा ने कहा -सब ऐशोआराम तो थे, पर मुझे लग रहा था कि अब मरे कि तब। फकीर ने कहा -तुमने एक दिन मेरे और तुम्हारे बीच का फर्क पूछा था, याद है न। हमारे बीच यही फर्क है कि तुम मौत को भूलकर जीते हो और मैं मौत को याद रखकर जीता हूँ। 'संत वही होता है, जो अंत को सामने रखकर जीता है।' फकीर की बात सुनकर राजा समझ गया कि फकीर और आम आदमी के जीने के अंदाज में यही फर्क होता है।

सच्चा इंसान

में चला गया। छह महीने बाद जब वह संत के पास वापस आ रहा था तो महिला ने उसके साफ वस्त्रों से झाड़ू छुआ दिया। जिज्ञासु गुस्से में महिला को मारने दौड़ा। संत सारा नजारा देख रहे थे। उन्होंने फिर उस जिज्ञासु से कहा कि ज्ञान प्राप्त करने के अधिकारी अभी तक तुम बने नहीं हो। अभी जाओ। जिज्ञासु फिर जंगल में तपस्या के लिए चल दिया। इस बार जब वह छह महीने बाद लौटा तो रास्ते में खड़ी महिला ने उस पर ढेर सारा कूड़ा-करकट डाल दिया। इस बार उस जिज्ञासु को बिल्कुल गुस्सा नहीं आया। जिज्ञासु उस महिला को प्रणाम करके बोला -बहन, तुमने यह बाहरी कूड़ा-करकट मेरे ऊपर डालकर मुझे समझा दिया कि भीतर घुसी बुराइयों का कूड़ा इससे भी ज्यादा गंदा है। संत यह सब देख रहे थे। वह जिज्ञासु संत के पास पहुंचा और बोला -गुरुजी, मुझे ज्ञान दीजिए। संत ने उसे गले लगाकर कहा कि -जिसने अपनी बुरी आदतों पर नियंत्रण कर लिया वही सच्चा ज्ञानी है। तुम्हें ज्ञान प्राप्त हो गया है, अब तुम सच्चे और अच्छे इंसान बन गये हो।

सुंदर गहना

की लालच में राजकुमारों की हत्या तो नहीं की। अचानक सेवक का हृदय परिवर्तित हुआ। वह अपने आपसे बोला -तू इन गहनों को देखकर खुश हो रहा है। पर राजकुमारों ने इन गहनों को त्याग दिया है, ज़रूर उन्हें इससे भी सुंदर गहना मिला होगा। सेवक ने सोचा कि मैं घर जाकर क्या करूंगा? मैं भी उस रास्ते पर जाऊंगा जिस पर सातों राजकुमार गये हैं। यह सोचकर वह वापस संत के पास पहुंचा। वहां सातों राजकुमार दीक्षा लेने की तैयारी कर रहे थे। सेवक बोला -हे राजकुमारों, आपके वैराग्य भाव को देखकर मेरा भी मन बदल गया है। मैं भी सन्यासी बनना चाहता हूँ। उसने संत से दीक्षा की बात कही। संत राजी हो गए। राजकुमारों ने कहा -हम चाहते हैं कि आप हमें सन्यास देने से पहले हमारे सेवक को सन्यास दें। संत ने कहा -तुमसे पहले इसे सन्यास देने का मतलब है तुम लोग इसे प्रणाम करोगे और यह तुम लोगों से बड़ा हो जाएगा। तुम सातों राजकुमारों को इसके सामने झुकना पड़ेगा। राजकुमारों ने कहा -हम यही तो चाहते हैं। हम राजकुमार होने के भान के कारण संत बनने के बाद भी अपने अहंकार को न मिटा पाएंगे। इसलिए आप इसे पहले सन्यास दें ताकि जिसने जीवन भर हमारी सेवा की है अब हम उसकी सेवा करके उसके ऋण से मुक्त हो सकें।



दिल्ली (मजलिस पार्क)। दिल्ली ग्राम विकास बोर्ड के अध्यक्ष एवं विधायक मंगतराम सिधल को शिवध्वज भेंट करते हुए ब.कु. राजकुमारी



काठमाण्डू (नेपाल)। 'निःस्वार्थ सेवा के लिए आध्यात्मिकता' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पशुपति विकास क्षेत्र के कोषाध्यक्ष नरोत्तम वैद्य, विश्व हिन्दु महासंघ के अध्यक्ष दामोदर गौतम, ब.कु.राज तथा अन्य।



सरदूलगढ़ (पंजाब)। तहसीलदार पुणेन्द्र कौर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु.बिन्दु, ब.कु.नीतू। साथ हैं ब.कु.ओमप्रकाश।



बहराईच (वाराणसी)। उत्तरप्रदेश विधानसभा के स्पीकर माताप्रसाद जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु.साधना तथा ब.कु.जया।



बोकारो (स्टील सिटी)। फैमिली कोर्ट के न्यायाधीश राजनारायण तिवारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु.कुसुम।



दिल्ली (करोल बाग)। 'लेडी रीडिंग हेल्थ स्कूल' की नर्सस को तनाव प्रबंधन विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात ब.कु.विजय।

आपकी खुशी आपके पास



क्या आप अशांत हैं, क्या आप अवसाद के दौर से गुजर रहे हैं, क्या आपके मिजाज को क्रोध ने वश कर लिया है, क्या आप तनाव से ग्रस्त हैं। क्या आपने कभी सोचा है मन की शांति के लिए रिमोट कंट्रोल आपके पास है। देखिए नॉन स्टॉप, बिना किसी विज्ञापन के, आध्यात्मिकता के गुब्बारे हस्तियों को स्पष्ट करता हुआ 'पीस ऑफ माइंड चैनल, आपके शहर में उपलब्ध है।

ब्रह्माकुमारीज टांसपोर्ट विंग (शिपिंग एविएशन टूरिज्म) द्वारा 'रिडिफाइनिंग हैपीनेस, विषय पर सेमिनार का आयोजन ज्ञानसरोवर परिसर में 26 जुलाई से 30 जुलाई 2013 तक आयोजित किया जा रहा है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - ब.कु.मोरा, राष्ट्रीय संयोजिका

Email -
satservicestw@gmail.com
Mob.-9920142744,
9413384864

सूचना- ओमशान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने वाले भाइयों की आवश्यकता है। ईमेल, वेबसाइट तथा साफ्टवेयर की जानकारी रखने वाले भाई की भी आवश्यकता है। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें -

E-mail-
mediabkm@gmail.com,
Mob.-8107119445



सूचना
आप सभी भाई-बहनों की मांग पर राजयोग प्रवचन माला की पुस्तक 'राजयोग मेडिटेशन' नवीन संस्करण के साथ, भगवान कौन? की गीता का आध्यात्मिक रहस्य पुस्तक, हैपीनेस इंडेक्स, कथा साहित्य उपलब्ध है। इसे आप ओम शान्ति मीडिया, शान्तिवन कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि श्रेष्ठ पुरुष जो आचरण करते हैं, अन्य पुरुष भी उसका अनुसरण करते हैं। अतः श्रेष्ठ कर्मों से श्रेष्ठता प्राप्त करें ताकि अन्य भी पवित्र और लोकमंगलकारी मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित हों। यह ठीक है कि संस्कारों का प्रतिस्थापन सदा शीर्ष से होता है। जो व्यक्तिगत समाज की संरचना या व्यवस्था को प्रभावित करने की क्षमता से युक्त होते हैं, उनका व्यवहार समाज को प्रभावित करता है। इसलिए पहली आवश्यकता है कि जो लोग शीर्ष पर हैं, वे अपने आचरण से अनुशासन, मर्यादा और नैतिकता लायें।

अवधूत गीता में श्रेष्ठता के स्तर को पाने के लिए चार सोपान बताये गये हैं। ये चार सोपान परम पद प्राप्ति का आधार भी है। श्री दत्तात्रेय के अनुसार आसक्ति, द्वेष और क्रोध से मुक्त होना सभी प्राणियों के कल्याणार्थ निरंतर कार्य करना, ब्रह्मज्ञान विषयक बोध पर दृढ़ रहना और धैर्यवान होना, ऐसे तत्व हैं जो मानव में शुद्धि और फिर श्रेष्ठता के भाव विकसित करते हैं। भारतीय संस्कृति में धर्म और नीति का अद्वैत सम्बन्ध है। दोनों पृथक सत्ता रखने के पश्चात भी एक दूसरे से जुड़ी हैं। धर्म हमें आत्मिक दृष्टि से शुद्ध बनाता है जबकि नीति उस शुद्धता का व्यावहारिक पक्ष है। यदि धर्म के सारतत्व और लक्ष्य को समझने में त्रुटि हो जाती है तो नीति भी

प्रश्न -मेरा यह प्रश्न है कि शिव बाबा ब्रह्मा तन में ही क्यों आते हैं। उन्होने ब्रह्मा को ही क्यों चुना? दूसरी बात यह है कि कई लोग कह देते हैं कि मेरे में शिव बाबा आते हैं, यह कहाँ तक सत्य है?

उत्तर - देखिये बन्धु, ज्ञान के सागर, त्रिकालदर्शी परमात्मा के चुनाव में आपको संशय नहीं होना चाहिए। वह स्वयं जानते हैं कि उन्हें किसके रथ में बैठना है, वे सर्वशक्तिवान हैं, वे जिस तन में आते हैं, उनका मस्तिष्क बहुत शक्तिशाली होना चाहिए अन्यथा वह ब्रेन उस शक्ति को स्वयं में समा नहीं सकेगा, देह स्थिर भी नहीं रह पायेगी। जैसे आपने देखा हो जब किसी के तन में भी कोई आत्मा आती है तो उसका सिर भी हिलता रहता है। भगवान किसी के तन में आये तो वह ब्रेन बहुत शक्तिशाली होना चाहिए। ब्रह्मा का ब्रेन ही इतना शक्तिशाली है।

दूसरी बात -जब किसी के तन में आकर कोई कहता है कि मेरे तन में शिव बाबा आते हैं, वास्तव में वो भगवान नहीं होते। कोई भी भटकती आत्मा अपना वह रूप दिखा देती है। भगवान सबके तन में नहीं आ सकते। जिसके तन में भगवान आये वह परम पवित्र भी होना चाहिए। जो देहधारियों के लगाव को चालीस-पचास वर्ष में भी नहीं भूले, उनके तन में भगवान भला कैसे आयेंगे। इसलिए इस भ्रम से सदा दूर रहना चाहिए। अन्यथा आप पुनः सत्य मार्ग से भटक जायेंगे।

ऐसे कई केस हमारे सामने भी आये। किसी आत्मा ने किसी के तन में प्रवेश करके कहा कि मैं शिव बाबा हूँ, फिर भोग खाकर बता दिया कि मैं शिव बाबा नहीं हूँ, मैंने तो भोग खाने के लिए ऐसा कहा था।

प्रश्न -बाबा ने हमें क्रोध पर विजय पाने को कहा है। मैं इस पर काफी ध्यान रखती हूँ। परन्तु जब मेरा पति मुझे से झूठ बोलता है तो मुझे बहुत क्रोध आ जाता है। फिर बाद में मुझे पश्चाताप होता है। मैं इससे भी मुक्त होना चाहती हूँ।

उत्तर - आपका पति झूठ बोलता है और आप क्रोध करती हैं, सचमुच आप दोनों ही महान हो। वह झूठ बोलकर गलती करता है और आप उसकी गलती को दूसरी बड़ी गलती से ठीक करना चाहती हो -क्या यह सम्भव है? क्रोध करना झूठ बोलने से कहीं ज्यादा घातक है। हो सकता है आपका पति डर के कारण झूठ बोलता हो, आप उसे भयमुक्त कर दो, तो वह झूठ बोलता ही नहीं। आपका क्रोध दबा हुआ है, जो तब प्रकट होता है, जब आपकी

हम सुधरेंगे जग सुधरेगा



(स्वामी चक्रपाणि)

अशुद्ध हो जायेगी। इसलिए धर्म के यम, नियम और सप्त मर्यादाओं का पालन करते हुए अपनी नीतियों में पवित्रता का लाना परमावश्यक है। तैतिरीय उपनिषद् में विद्या पूर्ण करके अपने घर वापस जाने वाले स्नातक को आशीष प्रदान करने के पश्चात आचार्य कहते हैं कि सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो, स्वाध्याय में प्रमाद मत करो। साथ ही यह भी बताते हैं कि माता, पिता, आचार्य तथा अतिथि में देव बुद्धि रखने वाले बनो। एक अन्य स्थान पर आचार्य अपने स्नातक को स्मरण दिलाता है कि आपका ज्ञान लोकमंगल का कारण हो, विद्या अहंकार के लिए नहीं, विनम्रता के लिए है। कभी सम्पत्ति पर, ज्ञान पर गर्व मत करो। वह कार्य करो जो निंदा के योग्य न हो और सबके हित में हो।

जब स्वामी रामतीर्थ जापान गये तो एक युवक ने उनसे प्रश्न किया कि आप बार-बार यह क्यों कहते हैं कि भारत महान है। महान देश परतंत्र नहीं होते। वह तो नौ सौ वर्षों से परतंत्र है। इस पर स्वामीजी ने उत्तर दिया कि भारत एक देश नहीं है,

कामना पूर्ण नहीं होती। आप चाहती हैं कि पति झूठ न बोले। आप इस कामना का त्याग कर दें और अति स्नेह व अपनेपन से उन्हें उनकी गलती का एहसास करायें। वास्तव में कामना ही क्रोध का कारण है। कामना अच्छी भी हो सकती है परन्तु श्रेष्ठ कामना में यदि क्रोध का विष भी घुल जाए तो वह खुशी व शक्ति को नष्ट कर देता है। आप कामनाएँ छोड़ें, सरलचित्त बनें व संकल्प कर लें कि दूसरों के द्वारा ये तो सब कुछ होता ही रहेगा, परन्तु मुझे अपनी स्थिति नहीं बिगाड़नी है।

प्रश्न -मैं एक माता हूँ। मुझे दो बच्चे हैं, एक सोलह वर्ष का, दूसरा चौदह वर्ष का। दोनों पढ़ने में होशियार हैं परन्तु मुझे दोनों के भविष्य की बहुत चिन्ता रहती है। मुझे डर भी रहता है कि मेरे



बच्चों को कुछ हो न जाए।

उत्तर - आपके दोनों बच्चे पढ़ने में

होशियार हैं फिर भी आपको चिन्ता...यह गलत है। आपको जो कुछ करना है वो यह कि बच्चों को सुसंस्कारित करें। उन्हें इतना लाड प्यार भी न दें कि वे बिगड़ जाएं। प्यार व मर्यादा दोनों का संतुलन रखें। माँ बच्चों की सर्वश्रेष्ठ गुरु होती है। आपको ध्यान रहे बच्चों की इस आयु में, आपके प्रत्येक संकल्प का, आपके संस्कारों का, आपके व्यवहार का, आपकी पवित्रता का व आपकी योग्युक्त व स्वमान युक्त स्थिति का सीधा प्रभाव उन पर पड़ता है। आपकी ये सम्पूर्ण स्थिति जितनी श्रेष्ठ होगी, आपके बच्चे योग्य व चरित्रवान बनेंगे।

चिन्ता से निगेटीव एनर्जी बच्चों को जाती है। आप उनके लिए प्रतिदिन शान्त में बैठकर ये दो संकल्प किया करें...ये दोनों आत्माएँ देव कुल की महान आत्माएँ हैं, ये चरित्रवान हैं और इनका भविष्य बहुत ही उज्ज्वल है। आपको यह रहस्य भी ख्याल में रखना है कि हमारे प्रत्येक संकल्प में रचनात्मक शक्ति है। जो संकल्प हम बार-बार करते हैं उसका हम निर्माण करते हैं। इसलिए भयमुक्त होकर कोई भी गलत संकल्प बार-बार न करें। बल्कि इस तरह सोचा करें कि मेरे बच्चों के साथ तो स्वयं भगवान हैं -

भारत एक धर्म है। वह जापान में भी भगवान बुद्ध के रूप में है, कहीं (स्वामी चक्रपाणि) गुरुनानक के रूप में है, तो कहीं श्रीराम के रूप में। ऐसा धर्मशील और नीतिगत भारत जो विश्व के प्रत्येक उस प्राणी के हृदय में है जो स्वयं श्रेष्ठता प्राप्त कर दूसरों को श्रेष्ठ बना रहा है, परतंत्र हो ही नहीं सकता। आपके भीतर भी भगवान बुद्ध के पंचशील और त्रित्त हैं। वहीं भारत है। दुखी की सेवा, करुणा, अहिंसा, सदाचार, सत्य और अस्त्य भारत ही है। धर्म और नीति अमूर्त तत्व है लेकिन व्यवहार में प्रकट होते हैं। सत्य में ये दोनों समाहित हैं। इसलिए ऋग्वेद में ऋषि कहते हैं कि हे अग्ने! असत्य का त्याग करके सत्य को ग्रहण करने की शक्ति दीजिए। हे अग्ने! मुझे उत्तम पथ पर चलने के लिए प्रेरित कीजियेगा। हे अग्ने! हम आघात करने वाले पर प्रत्याघात न करें। कोई हमें श्राप देता है तो उसका प्रत्युत्तर प्रेम से दें। महाभारत के शांति पर्व में भी निर्देश दिये गये हैं कि समय (शेष पेज 4 पर)

वे उनकी छत्रछाया में सुरक्षित हैं। यह भी आप ध्यान रखें कि इस आयु में वे बुरे संग में न आयें। आजकल लेपटाप और मोबाइल का दुरुपयोग भी बच्चों को बिगाड़ता है, इसके बारे में बच्चों को आदेश ही न दें बल्कि इनसे होने वाले नुकसान की भी जानकारी दें। **प्रश्न -मेरा प्रश्न है कि आप भी कहते हैं और बाबा स्वयं भी कहते हैं कि दिल से कहो, मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा तो तुरंत बाबा की मदद अनुभव होगी। परन्तु हम पाते हैं कि कुछ लोगों को तो बहुत मदद मिलती है, जबकि हमें उनकी मदद का एहसास नहीं होता। बाबा की ओर से यह भेदभाव क्यों है?**

उत्तर - बाबा की ओर से भेदभाव कभी नहीं होता। जो बात आपने कही वह स्वयं उन्होने ही कही है। स्वयं भगवान ने वचन दिया है कि जब भी दिल से तुम मेरा आह्वान करोगे तो बाप बंधा हुआ है मदद करने के लिए। तो क्या वह अपने वचन को निभायेगा नहीं। हम लौकिक अनुभवों से भी जानते हैं कि किसी माँ-बाप का कोई बच्चा यदि बीमार है तो वे कैसे बच्चे को मदद करते हैं। शिव बाबा तो हमारा ऐसा मातृपिता है जो हमें बहुत प्यार करता है और उसका स्वभाव ही है कि जब भी कोई प्यारा बच्चा उसे याद करेगा, वह उसकी मदद के लिए दौड़ा चला आयेगा। वह तो मदद देता है, परन्तु कहीं-कहीं हम ही उनकी मदद को ग्रहण नहीं कर पाते। ध्यान दें कौन हैं जो उसकी मदद को रिसीव नहीं कर पाते -

वे जो व्यर्थ संकल्पों में ज्यादा रहते हैं। जो अपनी बुद्धि रूपी लाइन को व्यस्त रखते हैं। जो जीवन में पवित्रता को नहीं अपनाते। जो उनकी आज्ञाओं पर ध्यान नहीं देते। जो उसे सच्चे दिल से प्यार नहीं करते, जिनका प्यार बंटा हुआ है। जिन्होंने उनसे सच्चा नाता नहीं जोड़ा है। जो उन्हें अपना नहीं मानते। जो अमृतवेलो योग्युक्त नहीं होते और वे जो उनके स्थापना के कार्य में सहयोग नहीं देते...

आप चेक कर लें। शिव बाबा को अपना बना लो। वह आवाज देते ही दौड़ा चला आयेगा। वह आपको अपनी बांहों में उठाकर रखेगा। हाँ, यदि आपके विकर्म ही मुंह खोले सामने खड़े हों तो कुछ समय आपको धैर्यता पूर्वक इंतजार भी करना होगा। स्वयं को पूर्णतः समर्पित कर दो...तुम जिस विधि राखो, हम उस विधि रहिये...।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

2012-2013 की अव्यक्त वाणियों का संक्षिप्त सार

सन्तुष्टमणियों का भाग्य, दिल का गीत पाना था सो पालिया - 30.11.12

बच्चों के याद और प्यार ने बापदादा को इस साकारी दुनिया में अपनी आकर्षण से बुला लिया। बापदादा दिल ही दिल में हर बच्चे के भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं। हर बच्चे के चेहरे में चमकता हुआ भाग्य, मस्तक में लाइट की प्राप्ति की चमक, हाथों में ज्ञान का भण्डार, दिल में दिलाराम, पांव में कदम में पदम दिखाई दे रहा है। ऐसा भाग्य देख हर एक का चेहरा चमक रहा है। ऐसे चेहरे चमकते हुए देख अन्य आत्मायें भी सोचती हैं इन्हों को क्या मिला है। सब चारों ओर के बच्चे सन्तुष्ट स्वरूप दिखाई दे रहे हैं। जैसे बच्चे बाप से दूर नहीं रह सकते तो बाप भी बच्चों से दूर नहीं रह सकता। अब ऐसी कमाल दिखाओ, दुनिया में हलचल और अचल बनाने वाले आप निमित्त हो। वह अपना कार्य नहीं छोड़ते तो आप भी अपने को निमित्त समझ वह हलचल और आप अचल, दोनों साथ-साथ पार्ट बजाओ।

मेरे को तेरे में परिवर्तन कर डबल ताजधारी बेफिक्र बादशाह बनो - 15.12.12

सवेरे से लेकर रात तक बेफिक्र बादशाह हो क्योंकि स्वराज्य मिला हुआ है। बेफिक्र बादशाह का मस्तक लाइट से चमकता है। बेफिक्र बादशाह ही डबल ताजधारी हैं। यह डबल ताज सारे कल्प में सिर्फ आप बच्चों को ही प्राप्त होता है। बेफिक्र बनने की सहज विधि है मेरे को तेरे में बदल लो। इसके लिए सहज साधन है अमृतवेले से लेके रात तक फॉलो ब्रह्मा बाप क्योंकि ब्रह्मा बाप भी साकार तन में हर जिम्मेवारी होते बेफिक्र बादशाह रहा है। अन्त दिन तक भी कोई आधार बिना लास्ट क्लास कराया। ऐसे हेल्दी और फखुर में वेल्दी। चाहे शरीर का हिसाब किताब है लेकिन स्थिति सदा बेफिक्र बादशाह। सुबह को उठते ही चेक करना, सबको-सेस में भी कोई फिक्र तो नहीं है? बापदादा भी खुश हो रहे हैं, ऐसे बच्चे सारे कल्प में अब संगम में ही मिलते हैं। सदा एक बात याद रखना - हमें विजयी बनना ही है।

हर एक सन्तुष्टमणि बन सन्तुष्टता की शक्ति द्वारा समस्यापूफ, समाधान स्वरूप बनो - 31.12.12

सन्तुष्टता की शक्ति बहुत श्रेष्ठ है। जहां सन्तुष्टता है वहां और शक्तियां भी आ जाती हैं। सन्तुष्टता माया और प्रकृति की हलचल को परिवर्तन कर देती है। सेवा में, साधियों में सन्तुष्टता की शक्ति वायुमण्डल को परिवर्तन कर लेती है। बापदादा ने देखा कई स्थानों में अभी सहनशक्ति से स्थानों को सदा निर्विघ्न बनाने में आवश्यकता की

आवश्यकता है। हर स्थान निर्विघ्न सन्तुष्टता की शक्ति से सम्पन्न हो। आदि से लेके अन्त तक ब्रह्मा बाप ने सन्तुष्टता की शक्ति से हर परिस्थिति पर विजय प्राप्त की। आजकल दुनिया में असन्तुष्टता बढ़नी ही है। बापदादा ने सभी बच्चों को विशेष अमृतवेले सहज वरदान के रूप में वरदान देने का प्लान बनाया है। बापदादा का विशेष दृढ़ संकल्प वालों को पुरुषार्थ में सहयोग प्राप्त होगा। अगर हर एक सन्तुष्ट रहेगा तो चारों ओर वाह, वाह का गीत बजेगा। बापदादा चक्र लगाये तो हर स्थान पर सन्तुष्टमणियों की चमक दिखाई दे। सन्तुष्ट रहना, सन्तुष्ट करना और सन्तुष्टता की शक्ति से विश्व में भी सन्तुष्टता का वायब्रेशन फैलाना। कोई भी छोटी मोटी प्रॉब्लम आवे तो मन से मधुबन पहुंच जाना, बापदादा बच्चों के मन में एकस्ट्रा खुशी की खुराक भर देंगे। मधुबन में आना अर्थात् अपने में ज्ञान, योग, धारणा और सेवा में कदम को आगे बढ़ाना। ऐसा प्लान बनाओ जो हर जोन में कोई भी पुरुषार्थ में कमजोर नहीं रह जाए। पुरुषार्थ में भी अच्छे ते अच्छे साथी बनके चलें क्योंकि आप निर्विघ्न बनेंगे तो उसका वायुमण्डल विश्व में फैलेगा।

बापदादा की आश - अब ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का कदम उमंग-उत्साह से तीव्र करो, इसका विशेष प्लान बनाओ - 18.01.13

बापदादा देख रहे हैं सबके मन में ब्रह्मा बाप के स्नेह की झलक दिखाई दे रही है। बाप के मन में भी हर बच्चे के प्रति प्यार की लहरें आ रही हैं। यह प्यार अलौकिक प्यार है। बाप ने हर बच्चे को तीन तख्त के मालिक बनाया है। आप श्रेष्ठ आत्मायें तीन तख्त के मालिक बन कितने रूहानी प्यार में, नशे में रहते हो। अगर चलते-चलते थोड़ा सा माया का वार हो भी जाता है तो भी बाप का प्यार समाप्त नहीं हो सकता और ही बापदादा साथी बच्चों को यही कहते इनको एकस्ट्रा सहयोग प्यार दे करके उड़ाओ। समय को तो सब जानते ही हो। समय कहाँ जा रहा है। अमृतवेले से लेके रात तक जो भी मन, वचन, कर्म करते हो, उसमें चेक करो बाप का कहना और मेरा करना समान रहा? मुरली रोज की बाप का कहना है। ब्रह्मा बाप भी आहवान कर रहे हैं आओ बच्चे साथ चलें अपने राज्य में। आत्माओं को भी मुक्ति का गेट खुलवाकर मुक्ति का पार्ट बजाने दो। किसको राज्य, किसको मुक्ति। ब्रह्मा बाप यही चाहते हैं, मेरा एक-एक बच्चा मेरे समान सम्पन्न बन जाये। संस्कारमिलन में प्रत्यक्षफल दिखाओ।

बाप के स्नेह में समाते हुए, शक्तियों द्वारा मन को कंट्रोल कर सदा मनजीत,

जगतजीत बनो - 02.02.13

हर एक बच्चे का चेहरा बापदादा के स्नेह में समाया हुआ है। हर एक बच्चे में तीन वरदान देख रहे हैं। एक बाप के स्वरूप में वसें का वरदान, दूसरा शिक्षक के रूप में श्रेष्ठ शिक्षा का वरदान, तीसरा गुरु के रूप में वरदानों का वरदान। तीनों ही वरदान का स्वरूप देख हर्षित हो रहे हैं। बाप भी बच्चों के स्नेह में लवलीन है। यह स्नेह अशरीरी बनाने का साधन है। बापदादा हर बच्चे के नयनों में हर एक बच्चे का भाग्य देख रहे हैं। इस एक जन्म में 21 जन्मों का भाग्य बना रहे हैं। यह परमात्म प्यार एक जन्म में इतना श्रेष्ठ बना रहा है, तो आत्मा लवलीन बन, अशरीरी बन अपने घर परमधाम जायेंगे, साथ में अपने राज्य के अधिकारी बन जायेंगे। आज विशेष वरदान दे रहे हैं - सदा बाप के स्नेह में समाते हुए मनजीत, जगतजीत बनो। मन को शक्तियों द्वारा कंट्रोल कर मनजीत बनना ही है। जैसे हाथ पांव को आर्डर में चलाते हो क्योंकि मेरा है, ऐसे मन को भी शक्ति स्वरूप हो चला सकते हैं। इस संगम समय पर वरदाता बाप हर बच्चे की वरदानों से झोली भर देते हैं। सदा खुश रहना और खुशी बांटना क्योंकि आज विश्व की आत्मायें अपने-अपने कार्य करते हुए खुशी के बजाए अनेक सरकमस्टांश में अपने को मजबूर समझती हैं। मजबूर को मजबूत करो। खुशी बांटो। मन के व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर व्यर्थ को विदाई दे दो। व्यर्थ संकल्प भी समय निकाल देते हैं।

कर्मयोगी जीवन में तीव्र पुरुषार्थ द्वारा हर सबजेक्ट में सदा सन्तुष्ट और खुश रहो, अपने खुशनुमा, दिव्यगुण सम्पन्न चेहरे द्वारा खुशी का अनुभव कराओ - 20.2.13

आज बापदादा अपने खजानों से सम्पन्न बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। ज्ञान का खजाना बंधनमुक्त, दुःख, अशान्ति मुक्त बनाने वाला है। योग से बहुत शक्तियां प्राप्त हुई हैं। धारणा से बहुत-बहुत गुणों की प्राप्ति हुई है। लेकिन सबसे बड़ा खजाना है संगम समय का खजाना। क्योंकि संगम पर ही बाप शिवबाबा, बाप रूप में भी मिलता, शिक्षक रूप में भी मिलता और सतगुरु रूप में भी मिलता। ऐसा ईश्वरीय स्नेह सारे कल्प में नहीं मिल सकता। बापदादा के दिल से निकलता है वाह बच्चे वाह। हर बच्चा बाप का प्यार बन गया है। अभी बापदादा हर बच्चे को तीव्र पुरुषार्थ देखने चाहते हैं। तीव्र पुरुषार्थ अर्थात् सब सबजेक्ट में अपने पुरुषार्थ से सन्तुष्ट हों। (क्रमशः)



जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को आध्यात्मिक संदेश देने के पश्चात ब्र.कु.जयप्रकाश समूह चित्र में।



वाराणसी (बजरड़ीहा)। आध्यात्मिक कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष अखिलेश मिश्र, महानगर अध्यक्ष डॉ.ओ.पी.सिंह, महापौर पं.रामगोपाल मोहले, ब्र.कु.उषा, ब्र.कु.सुरेन्द्र, ब्र.कु.विमला, ब्र.कु.निर्मला, ब्र.कु.सरोज तथा अन्य।



नासिक (महा.)। राज्य परिवहन निगम के कर्मचारियों को स्वस्थ मन व सुरक्षित यात्रा विषय पर प्रशिक्षण देने के पश्चात ब्र.कु.वासंती व ब्र.कु.जीतू।



नासिक (महा.)। राज्य परिवहन निगम के कर्मचारियों को स्वस्थ मन व सुरक्षित यात्रा विषय पर प्रशिक्षण देने के पश्चात ब्र.कु.वासंती व ब्र.कु.जीतू।



सिद्धपुर। नुगावेस्टा कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर ली हीयुन्की (कोरिया) को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.विजया।



चिलोडा। ग्रामवासियों को शिव संदेश देने के लिए शांति एक्सप्रेस ट्रेन को रवाना करते हुए सीआरपीएफ के डीआईजी थामस जांब, बी.सी.ठक्कर, ब्र.कु.तारा, ब्र.कु.धर्मिष्ठा तथा अन्य।

सात दिवसीय 'भारतीय मूल्य व सांस्कृतिक मेले' का आयोजन



श्यामस बेन द्वारा ब्र.कु.मोहिनी को एशिया बुक रिकार्ड्स का सर्टिफिकेट प्रदान करते हुए। साथ हैं ब्र.कु.बृजमोहन, ब्र.कु.योगिनी तथा अन्य।



मुम्बई-मुलुंद। ब्र.कु.गंगाधर, ब्र.कु.रानी, ब्र.कु.बृजमोहन, दीपक हारके, भाजपा सचिव श्याम जाजू दिल्ली, ब्र.कु.गोदावरी, ब्र.कु.योगिनी, विधायक सरदार तारा सिंह, पूर्व न्यायाधीश ईश्वरैय्या, डॉ.राजकुमार कोल्हे, विश्व की सबसे बड़ी पुस्तक प्रजापिता ब्रह्मा - एक अद्भुत जीवन रहस्य के विमोचन के अवसर पर समूह चित्र में।

मुम्बई-मुलुंद। 'भारतीय मूल्य व सांस्कृतिक मेले' के सात दिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए भाजपा महासचिव श्याम जाजू ने कहा कि धार्मिकता, सात्विकता व संस्कारों के निर्माण से परिपूर्ण कार्यक्रम नित्य प्रति बढ़ रहे विकारों पर काबू पाने में सहयोगी बन सकते हैं। सभ्य समाज की नींव है

आध्यात्मिक मूल्य। बिना मूल्य संसार में सद्भावना नहीं आ सकती। उन्होने आशा जताई कि इस मेले के आयोजन से समाज मूल्यों के प्रति जागरूक होगा तथा अपराध भी कम होंगे।

ब्रह्माकुमारी संस्था के अतिरिक्त सचिव ब्र.कु.बृजमोहन ने कहा कि आत्म-अभिमान बनकर व्यवहार करने से

सात दिवसीय मेले की झलकियां - पर्सनालिटी डेवलपमेंट, महिला सशक्तिकरण, ब्लड डोनेशन कैम्प, ड्राइंग व पेंटिंग के द्वारा आध्यात्मिकता, कवि सम्मेलन, निशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आदि।

सद्भावना, आपसी प्रेम बना रहेगा। देह अभिमान में आने से अहंकार, क्रोध, लोभ, मोह आदि के वश हो जाते हैं। विधायक सरदार तारा सिंह ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा की जा रही

आध्यात्मिक सेवाओं की सराहना करते हुए कहा कि उन्होने विश्व स्तर पर लोगों के संकल्पों, दिलों एवं जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया है। फिल्म अभिनेत्री कुनिका ने कहा कि (शेष पेज 4 पर)

स्व-सशक्तिकरण व आत्मविश्वास जगाएं

हांगकांग। 'अवेकनिंग विद ब्रह्माकुमारीज' टीवी कार्यक्रम के माध्यम से करोड़ों लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए प्रयत्नशील ब्र.कु.शिवानी व लोकप्रिय अभिनेता सुरेश ओबराय ने विदेश यात्रा के दौरान हजारों श्रोताओं को जीवन जीने की कला सिखाते हुए उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया।

ब्र.कु.शिवानी ने 18 मार्च से विभिन्न कार्यक्रमों में अपने सारगर्भित अभिभाषण शुरू किए। व्यस्त जीवन में उलझे होने के बावजूद हजारों की संख्या में अप्रवासी भारतीयों ने उनसे रूबरू होने के सुनहरे अवसर का लाभ उठाया। इनमें सिंधी व मारवाड़ी समुदाय के भाई-बहनें शामिल थे। कुछ सभाएं तो दो घण्टे तक चलीं। जब ब्र.कु.शिवानी ने व्यवसायियों को जीवन की बैलेंस शीट का रहस्य समझाया तो सभी नई ऊर्जा व चेतना अनुभव कर रहे थे। परमात्मा, प्रार्थना, रीति-रिवाजों की व्याख्या भी उन्होने चमत्कारिक ढंग से की। अनिश्चितता की स्थिति में जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, उनसे भी सही सलामत निपटने का मूल मंत्र समझाया। ब्र.कु.बिन्दु, ब्र.कु.रोहिणी व सोमान ने अतिथियों का अभिवादन किया।

मनीला, फिलिपाइन्स, जकार्ता व बैंकाक में भी हजारों लोगों ने भी कार्यक्रम का लाभ उठाया।

सुरेश ओबराय ने सभाओं में विस्तार से बताया कि किस

प्रकार ब्रह्माकुमारी संस्था से जुड़कर उन्हें अपने जीवन में सुखद परिवर्तनों का आभास हुआ। ब्र.कु.शिवानी ने उम्मीदों से जुड़े विभिन्न पहलुओं

को सार्थक बनाने में राजयोग के योगदान की तर्क संगत व सहज व्याख्या की। उन्होने कहा कि महानता की ओर अग्रसर हों। हम लोगों को

नियंत्रित करने का प्रयत्न करते हैं लेकिन अपने मस्तिष्क को नियंत्रित करने की शक्ति खो देते हैं। स्वयं का संतुलन कायम नहीं रख पाते।



फिलीपींस। ब्र.कु.शिवानी विभिन्न कार्यक्रमों की श्रृंखला में तुंग चुंग हाल में उपस्थित लगभग सात सौ प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए।

भारत - वार्षिक 170 रुपये
तीन वर्ष 510 रुपये
आजीवन 4000 रुपये
विदेश - 2000 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट माउण्ट आबू) द्वारा भेजें।

ओम शान्ति मीडिया
सम्पादक : ब्र.कु.गंगाधर
ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन, तलहटी
पोस्ट बॉक्स नं. - 5, आबू रोड (राज.) 307510
Enquiry For Membership, Mob. No. - 09414006096
(M) - 9414154344, E-mail : mediabkm@gmail.com,
omshantimedia@bktivv.org, website: www.omshantimedia.info

प्रति